२३४३

सुंदरशृंगार

भूमिका ।

रसिक पाठकों के आनन्दार्थ हमने इस ग्रंथ की एक हस्तलिखित अत्यन्त प्राचीन कापी खोज कर निकाली और यवन शब्द शुद्ध कर इसे प्रकाश किया। सुन्दर कवि पादशाह शाहजहां के समय में हुये हैं जिनका राज्य सन् १६२७ से लेकर सन् १६५८ ई० तक था। यह ग्रन्थ सम्वत् १६८८ में बना अर्थात् ईसवी सन् १६३२ में । इस पुस्तक में हमने कई जगह "दोहरा" शब्द लिखा है, जिसको लोग दोहा न समझें किन्तु वह हरिपद छन्द है जिनका लक्षण यह है कि—

पहिले तीजे चरण में कला कला * परिमान ।
दूजे चौथे शिवकला † हरिपद छन्द बखान ॥

---

* १६ मात्रा † ११ मात्रा कहीं कहीं १२ मात्रा भी होती है ।

दोहे से और हरिपद छन्द में किञ्चित् अन्तर है सो पाठकों को ऊर्ध्वलिखित प्रमाण से विदित हो जायगा। हम आशा करते हैं कि हमारे काव्य प्रेमी रसिक लोग इस कवि के काव्यामृत से निज हृदय को सन्तोष दे हमारे इस परिश्रम को सुफल करेंगे।

प्रकाशक
रामकृष्ण वर्म्मा
सम्पादक भारतजीवन
काशी।

अथ सुन्दरशृङ्गार ।

दोहा ।

देवी पूजि सरस्वती पूजि हरी के पाइ ।
नमस्कार कर जोरि कै कहै महाकविराइ ॥१॥
नगर आगरो बसतु है जमुनातट सुभथानु ।
तहां पातशाही करैं बैठे साहिजहानु ॥ २ ॥
साह बड़ो कवि मुखतनिक क्योंकरि बरन्यो जाँहि।
ज्यों तारे सब गगनके मूठी मे न समाँहि ॥३॥
जिन पुरुषन के वंश में उपज्यो साहिजहानु ।
तिन साहनके नामको अब कवि करै बखानु॥४॥

छप्पै ।

प्रथम मीर तैमूर लियो साहिबकिरान पद ।
ताको मीरासाह बहुरि सुल्तान महम्मद ॥
अबूसैद पुनि उमरशेख बाबर जु हुमाऊँ ।
साहि अकब्बर साहि जहांगीरहि जु गनाऊँ ॥
तिहि वंश भयो कविराज भनि बड़भागी बड़िम

वख्त । धरि अटलछत्र बैठ्यो धुरुव साहिजहां दिल्ली तख्त ॥ ५ ॥

त्रिभंगी छन्द ।

जबलग्गि भवानी सिव सेनानी रवि असमानी पन्थनि मैं । जबलग्गि सुरग्गन गगन उडग्गन बरनि अष्टगन ग्रन्थनि मैं ॥ जबलग्गि पुरन्दर हिमगिरि मन्दर बाणी सुन्दर भनि सुखदा । तबलग्गि रहो चिर भुव ध्रुव ज्यों थिर साहिजहां सिर छत्र सदा ॥ ६ ॥

दोहा ।

इक छिनुके गुन साह के बरनैं सब संसार ।
जौभि थकै बीते बरष तऊ न पावैं पार ॥ ७ ॥
तीनि पहर लौं रवि चलै जाके देसन मांह ।
जीति लई जगती इती साहिजहां नरनाह ॥
कुल समुद्र खाई किये कोट तौर के ठांउ ।
आठो दिसि यों बसकरी ज्यों कोजतु इकगांउ॥
साहिजहां तिन गुनिन को दीने अनगनदान ।
तिनमैं सुन्दर सुकवि को कियो बहुत सनमान॥

नगभूषन मनि सब दिये हय हाथी सिरपाइ ।
प्रथम दियो कविरायपद बहुरि महाकविराइ ॥
विप्र ग्वालियर नगर को बासी है कविराज ।
जासों साह मया करैं दास गरीबनेवाज ॥१२॥
जब कविको मन यौं बढ्यौ तबबुद्धिकियोबिचार।
बरनि नायिका नायिकनि रच्यो ग्रन्थ विस्तार॥
सुन्दरकृत सिंगार है सकल रसनि को सार ।
नाम धर्‍यो या ग्रन्थ को रचि सुन्दरसिंगार॥१४॥
जो सुन्दरसिंगार को पढ़ै गुनै सुज्ञान ।
तिन जानौं संसार मैं कियो सुधारस पान॥१५॥
संवत सोरह सै बरस बीते अट्ठासीति ।
कातिक सुदि षष्ठी गुरुहिं रच्यौ ग्रन्थ करिप्रीति॥

अथ सिंगाररसान्तर्गत नायिका कथन—दोहा ।

नौरस मै सिंगार रस सब तै नीको आहि ।
तामै नीकी नायिका बरनत हौं अब ताहि ॥
सो पुनि सुंदरकवि कहै तीनि भांति की नारि।
स्वीया परकीया अवरु सामान्या सुबिचारि॥१८॥

स्वीया कहिये आपनी परकीया परनारि ।
सामान्या ताकों कहैं जाकों धन सो प्यार ॥१९॥

अथ स्वकिया लक्षण ।

ये लक्षण स्वीयानि के बरनत हैं कविराज
पति की अति सेवा करै सील सुधाई लाज॥२०॥

कवित्त ।

देखति नैंन के कोरनि लों अधरानही मैं मुसक्यान को थानो । बोलति बोल सो कंठही मैं चलतें पग पैं न कहूं अहटानो ॥ सुंदर रोस नहीं सपने अरु जो भयो तो मनही मैं बिलानो। मैं बसुधाऽत्र सुधाई सबै पर याकी सुधाई सुधाई है मानो ॥ २१ ॥

दोहा ।

सोई स्वीया तीनि विधि बरनत हैं कविराइ ।
मुग्धा मध्या प्रौढ़िका बरनौं तिन्है बनाइ॥२२॥

अथ मुग्धा लक्षण — दोहा ।

जाके तन जोबन झलक झलके कछु इक आइ।
मुग्धा तासों कहत हैं महा कविन के राइ॥२३॥

कवित्त ।

चिलकीं अब चाहति हैं तन सुंदर जोबन जोतिन की चिनगीं । थिरताई की आँवनि पाँवनि मैं पुनि चंचलता की डगैहू डगीं ॥ बतिआनि की यों धुनि पावत हीं मुख तें निकसैंगी सुधा सों पगीं । जिन आँखिन सूधेहि देखति ही अब ते अखियां तिरछान लगीं॥२४॥

दोहा ।

सो मुग्धा द्वै भांति की पण्डित करत बिबेक ।
कहिये इक अज्ञात है ज्ञातजोबना एक ॥२५॥

अथ अज्ञात दोहरा ।

अपने तनमै जोबनआगम जो नहिं जानत बाल
ताहि कहत अज्ञातयौवना सुंदर गुनी रसाल ॥

कवित्त ।

धाइ मो जाइ कै धाइ कह्यो कहूं धाइ कै पूछिये का तें ठई है । बैठि रही निहचिन्त कहा सुनि मेरी सबै सुधि भूलि गई है ॥ सुंदर देखि डेराति इन्है उपजी उर माँभ उपाधि नई

है। काँचो कली सी ही कालि परों अब छोटी सुपारी सी आजु भई है ॥ २७ ॥

अथ ज्ञात।

जोबन अपने देह मै आयो जानति बाम ।
कवि सुंदर तासों कहै ज्ञातयौबना नाम ॥२८॥

कवित्त।

छाती नितम्ब लखे दुलही के अलीनहु की मनसा ललचानी। ऐसी नवेली को नायक हूजै री आपुस में सब यों बतियानी ॥ सुंदर जोवन रूप सराहत सुंदरि आँखिनही मै लजानी। डीठि बचाइ सखीन की पै निज देह कों देखि उही मुसुकानी ॥ २९ ॥

नवोढ़ा लच्चण—दोहा।

मुग्धापन मैं व्याहिये कहैं नवोढ़ा ताहि ।
सकुचति डरपति रतिकथा सुनें न भावै जाहि॥
नवोढ़ानि की रीति यह नवभूषन को चाह ।
लाज करत ऐसी लसैं को करि सकै सराह॥३०॥

कवित्त ।

जाके रूप आगे रूप रति को रतीकु लागै तिलौ भरि छबि के तिलोत्तमा न तूल है। सुंदर नवेली अलबेली बनी दुलहिनि अंग अंग रंग रंग पहिरे दुकूल है॥ झनक मनक होत भूषन नवीन बनी कनक बरन तन चंपे कैसो फूल है। आलिन की ओट ह्वैकै चिक मांझ दृग दैकै दुरि दुरि दौरि दौरि देखि जाति दूलहै॥ ३२॥

खेलति हो दुलहिनि सुंदर सहेली साथ सोने की सी बेली अलबेली सी बधू नई। आपुस मै सखी सब सराहति ताहि चाहि धाइ कह्यो डीठि लागि जायगो रहो दई॥ तब मिसु बालि कह्यो ख्यालहो मै आये लाल तिहि काल वह बाल ऐसि हाल है भई। आंखैं भरि आईं मुख पीरी परि आईं चौंकि चिरिया की नांई भाजि भौन कोन मैं गई॥ ३३॥

अथ नवोढ़ा सुरतान्त—कवित्त ।

गौने की राति के भोरही कोन मै बैठि

रही दुलही अनबोलैं । हाथ सौं छाती छपाइ कै सुंदरनार नवाइ दुराइ कपोलैं ॥ देखन कों जुरि आई सबै तिय नन्द जेठानी करैं यों कलोलैं । एक हँसैं इक बाँह गहैं इक आँचर ऐंचि कै घूंघुट खोलैं ॥ ३४ ॥

अथ विश्रब्धनवोढ़ा—दोहरा ।

सकुच बहुत डर छूटै रंचक पतिसों नेकु प्रत्याय ।
तासों पुनि विश्रब्धनवोढ़ा कहैं महाकविराय ॥

यथा ।

पग सों पग पींडरी पींडरी सों कवि सुंदर जंघनि जोरि रही । कुच दोऊ गहे कर एकही सों कर एक सो नीबी सु गाढ़े गही ॥ एहि भांति लिये डर पीतम के संग सोवतिही लडही * दुलही । अलि हौं तो गई छकि सी छवि देखि कै राति की रीझि न जाति कही ॥ ३६ ॥

* यह शब्द लज्जाशील है अतएव यदि यहां नवला या और कुछ पाठान्तर होता तो अच्छा होता ।

विस्रब्धा को सुरतान्त—कवित्त ।

कंचन सी काया ही सुकुन्द कैसी होश गई सुन्दर सिथिल अंग सम्हरै न डिग तें । आलस बचन चल बिचल है आभूषन सकुचति मन मन सुरति कों तिग तें ॥ मेरे मन छाई है छबीली को यहै सुछबि छिन भरि छूटति न अजहूं तो द्रिग तें । रगमगी आँखियनि सगबगी अलकनि डगमगी डगनि डगरि चली ढिग तें ॥ ३७ ॥

अथ मध्या लक्षण—दोहा ।

लाज काम जाके जबहि तन मै होत समान ।
सुंदर मध्या नायिका तासों कहैं सुजान ॥३८॥

कवित्त ।

जो फिरि करोट देइ तोहै बिछुरन सम छाती लागि रहै लाज लागति पै अतिही । आँखि मूंदि रहै पिय मूरति न देखी जाइ कैसहूं कै खोलि पै न घूंघरि सकत ही ॥ पिय पास परै अंक भरै केलि करै तऊ सोचतही राति

जाति ऐसी दुह गति ही। सुंदर यों काम के सकोच के द्बीच बाल मनसा ज्यों लीन होति सुमति कुमतिही ॥ ३९ ॥

याकी सुरति।

दम्पति करत रति सुंदर सरस अति वारो रतिपति रति कैयक सहस कौं। लाल की भुजानि पर ललना को लसैं जानु गाढ़े गहि ग्रींव पीवै अधर सुरस कौं ॥ ता समै प्रिया के पाइ पिय की कटी पै आइ रहे हैं अँचाइ ऐसी आंगुरीन दस कौं। मेरे जान पंचवान पंच पंचवाननि के बाँधि चल्यो दुहूं ओर दोय तरकस कौं * ॥ ४० ॥

याकी सुरतान्त।

बाल उठी रति केलि किये कवि सुन्दर सोहत अंग रसोहैं। आरसी मै मुख देखि स-

* द्रवणं शोषणं वाणं तापनं मोहनाऽभिधम्।
उन्मादनं च कामस्य वाणाः पञ्च प्रकीर्त्तिताः॥

अपि च।

अरविन्दमशोकंच चूतं च नवमल्लिका।
नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चवाणस्य सायकाः॥

कोचन सोचन लोचन होत लजौहैं ॥ लाल हँसे इहि वीचि रही ललना पिय कों तकि कै तिरछोहैं । पोंछि कपोल अँगीछति ओठ अमेठति आँखिन ऐंठति भौंहैं ॥ ४१ ॥

प्रौढ़ा लक्षण –दोहा ।

कामकेलि मै अतिचतुर पिय संग रतिसों प्रीति ।
सोई प्रौढ़ा नाइका है जाकी यह रीति ॥४२॥

यथा ।

कान्ह अलिंगन आसन चुम्बन कीने अनेक सो कौन गनावै । यों रति मानै तियाकों तऊ पति की छतियां छिनु छोड़ी न भावै ॥ भोर भयो पिय जानै न जासों इते पर ए चतुराई चलावै । आँचर सों ढकि मोती के माल की सुन्दर सीतलताई दुरावै ॥ ४३ ॥

प्रौढ़ा सुरतान्त ।

रस रंग भरे अँग संग प्रियापिय सोइ गये सुख दे सुख लै । इहि वीच जगी हरिजू उघरी अँगिया पर दीठि गई परिकै ॥ कुच ऊपर देख्यो

नखच्छत सुन्दर आठ को आँकु सो ऐसो लसै।
मनहु मनमत्थ को हाथी चढ़्यौ है महाउत जोबन आँकुस लै ॥ ४४ ॥

सोवतही रति केलि किये पति संग प्रिया अतिही सुख पायें। देखि सुरूप सखी सब सुंदर रीझि रही ठगि सी टक लायें ॥ कंचुकि स्याम सजै कुच ऊपर छूटी लटैं लपटी छबि छायें। बैठ्यो है ओढ़ि मनो गजखाल महेस भुजंगनि अंग लगायें ॥ ४५ ॥

अथ बिपरीत रति बर्णन।

बिपरीत रची रति राजिवनैन यों राधिका राजति ता पल मैं। दृग रंग भरे अलकैं बिथुरी मुसुक्यात लसैं मुकुता गल मैं ॥ कवि सुन्दर झाँई दुहू कुच की झलकैं हरि के यों उर स्थल मैं। छतियाँ तर तुंबनि दै मकरध्वज मानो तरै जमुनाजल मैं ॥ ४६ ॥

अथ धीरादि—दोहरा।

मध्या प्रौढ़ा मान करैं जब तब ये गुन लखिलीजे।
धीरा एक अधीरा दूजे धीराऽधीरा तीजे॥४७॥

अथ धीरा लक्षण ।

कौनहु एक रमूज मिस निज रिस देइ जनाइ ।
धीरा को लच्छन यहै कहैं महाकविराइ ॥४८॥

मध्या धीरा लक्षण ।

मध्या धीरा नाइका है ताकी यह रीति ।
जाके वचनन मै कछू रिस की होइ प्रतीति ॥

यथा कवित्त ।

आये हौ मेरे मया करि मोहन मोकों तो मानों महानिधि टूटी। आजु को बानक देखत सुंदर साज मिलै तिय होइ जो रूठी ॥ कैसी बिराजति नीकी नई कर की अँगुरी मै अनूप अँगूठी । प्यारे कह्यो हँसि प्यारी सों यों तब तेरी सौं तैं समुझौ सब झूठी ॥ ५० ॥

मध्या अधीरा दोहा ।

बोलै बोल कठोर अति जान न कोप दुराइ ।
मध्याऽधीरा कहत हैं ताहि महाकविराइ॥५१॥

कवित्त ।

सांझ परों बछरानि चराइकै आइकै बाहिर को फिरि भागे । कालि गये चलि वाहि

गली यह सुन्दर आये बनाइ के बागे ॥ आजु तो लोचन ऐसे हैं लालन मानो मजीठ के रंग मैं पागे । लाज तजी डर डारि दियो तुम तो अब वाके दुआरहि लागे ॥ ५२ ॥

अथ मध्याधीरा अधीरा दोहा ।

कछुक दुरे उघरे कछू प्रगट करै जो मान ।
धीराऽधीरा तीसरी सुन्दर ताहि बखान ॥५३॥

यथा ।

उठि आदर कीन्हों प्रिया पिय आये उनींदे कहूं रति के सुखतें । चख मोरे न भौंह मरोरी कहूं न जनायो कहूं रसना रुखतें ॥ चित्त के ढिग दै दृग भीतरी ओर को सुन्दर अन्तर के दुखतें । अँखिया भरि बात कछू सखि सों कहिवे कों भई न कहौ मुखतें ॥ ५४ ॥

अथ प्रौढ़ाधीरा दोहा ।

काहू मिस करि कोपको कामिनि करै प्रकासु ।
रति कों रूखी ह्वै रहै कहि प्रौढ़ा धीरा सु ॥५५॥

यथा ।

आवतहीं आदर सों उठि आइ आगे लये

मीठो बोलि सुन्दर जनायो नेह जिय सों । लै सेज बिठारे पुनि आपुन उसरि बैठी तहां कह्यो लाल आउ लागि मेरे हिय सों ॥ यह सुनि भौंहनि चढ़ाइ सतराइ नैन कछू मिस घालि खीझि काहू एक तिय सों । तब जाइ जानी पासवारी जब मुसकानी नाहीं सखि सों रिसानी रिसानी है पिय सों ॥ ५६ ॥

अथ प्रौढ़ा अधीरा ।

सापराध पियकों निरखि जाकै अतिरिस होइ ।
खिझि कै देइ उराहनो प्रौढ़ अधीरा सोइ॥५७॥

यथा ।

ढिग बैठिये सुंदर बैठहिगी जिनकै निमि नेहन सों फँसिये । बतियां सुनि, हौं बतियानहि कों छतियां लगि औरन के बसिये ॥ हँसि मोसों हहा हँसि लैहो कहा हँसि आये जहाँ हो तहाँ हँसिये । रिझवारिनि तूं रिझवारि वहै जु रिझावति है तुम से रसिये ॥ ५८ ॥

अलसात जम्हात लगे नख गात किते तुत-

रात हैं बोलतहूं । कवि सुंदर औ उलटेइ सुनो इतने पर सौंह करैं अजहूं ॥ तिन सौंऽब कहा कहिये जिनकी सपनेहूं न लाज भई कबहूं । जग में सखि औषधि है सब की पै सुभाव की औषध नाहि कहूं ॥ ५८ ॥

अथ प्रौढ़ाधीराऽधोरा लच्छण—दोहा ।

धीरज धरै अधीरजहिं करै जु पिय सों मान ।
प्रौढ़ा धीराऽधीर सों सुंदर ताहि बखान ॥६०॥

कवित्त ।

आये कहूं रति मानि बिहारी निहारि कै प्यारी कछू न कह्या है । बैठि रहो ढिग मोरे नहीं दृग धीरज सुंदर गाढ़ो गह्या है ॥ कान्ह धस्यो कर कामिनि कै उर आँ।सुनि को परवाह वह्यो है। ऊँची उसास लै बोली है यौं हमसौं तुमसों रस कौन रह्यो है ॥ ६१ ॥

अथ ज्येष्ठाकनिष्ठा लच्छण—दोहा ।

जासों पति अति हितु करै सुतिय ज्येषठा आहि ।
जासों घटि हित नाह को कहैं कनिष्ठा ताहि ॥

अगिलो पछिलो व्याह अरु नाहीं वैस विचारु ।
प्यारेही के प्यार पर है सब यह व्यवहार ॥६३॥

यथा - कवित्त ।

आपुस मै मन्दिर मै वैठी सौति दोऊ रमैं निहि समै आय कान्ह येई बोल कहे हैं । एक सो कह्यो कै आगे आउ आखिमूंदी खिलैं याही मिसि वाकी तोऽअआंखि मूंदि रहे हैं ॥ तौलौं और सुन्दर पकरि अंकभरि वाकी अधर कों पान करि गाढ़ कुच गहैं हैं । आली हौं अचंभे रही लाल के ये ख्याल देखि दैया इनि वातनि कों वैसे बन वहैं हैं ॥ ६४ ॥

अथ परकीया लक्षण—दोहा ।

दुरे दुरे पर पुरुषसों सुंदर करै जु प्रीति
बुद्धि चतुरई बहुत यह परकीया की रीति॥६५॥

कबित्त ।

बैन कहै सुनै कौन चैन पावै सुंदर ह्यां नेकही के निरखत नैन हरियतु है । दौरानी जठानी सासुनन्द वसै आस पास त्रासनि तें

ऊँचे न उसास भरियतु है ॥ बैठे भौन कौन मै कही है बात एक तुम कहैंगी वै कान्ह के बखानि करियतु है । अबहीं चवाउ चलि जैहै चुप रहो माई गोकुल में फूंकि फूंकि पांउ धरियतु है । ६६ ॥

परकीया भेद दोहा ।

गुप्तविदग्धा लच्छिता कुलटा मुदिता मानि ।
अरु अनुसयना नारि सब परकीया ए जानि॥६७॥

गुप्तायथा ।

भयो होतु है होइगो सुरत जु तीन॰प्रकार ।
जु दुरावै गुप्तासु अरु सुरतगोपना नारि ।

कवित्त ।

सारो सुवानि पढ़ावन कौं सबको मन सोहिँ को ठेलि पठैये । पास गये पिंजरानि के सुंदर कौतुक होत सो काहि दिखैये ॥ भोरे अनार के बीजनि के मेरे मानिक मोतिन कौं मुह नैये । तीछन चौंच के चोटनि सौं तन चोंथई लेत जबै ढिग जैयै ॥ ६८ ॥ *

* इसी प्रकार अन्यगुप्ता भी जानिये ।

अथ विदग्धा।

कही विदग्धा नाइका ताको दुविध विवेक ॥
वाक्यविदग्धा एक है क्रियाविदग्धा एक ॥७०॥

वाग्विदग्धा यथा।

सुंदर जानि कै मंदिर के पिछवारे हैं सुंदर ठाढ़े कन्हाई। चाहै कछू कह्यो पै सकुचै तब कीनी है बातहिं में चतुराई ॥ पूछि परोसिन कौं मिसु कै उत वाही में पीकों सहेट बताई। साथ चलैगी हौं कालि को जाउंगी देवी के दौहरे पूजन माई ॥ ७१ ॥

क्रियाविदग्धा यथा।

जाति ही बाल अलीन में लाल को पीछे सुबोल सुन्यो अनुरागी। क्यों लखिये लखि जाहि सखी लखिवेहि कै लालच के रस पागी ॥ छोड़ि दई सब साथ की सुंदरि यौं डगरी डग द्वै करि आगी। फिरि कै नार कह्यो चलो नारि सौं टेरन के मिसि हेरन लागी ॥ ७२ ॥

अथ लच्छिता ।

जाहि मीतसों प्रीत अति लखै सखी पुनि ताहि ।
कवि सुंदर नारीन मैं कहैं लच्छिता वाहि ॥७३॥

यथा ।

प्रीति भई भली भई बाढ़ो नित नई नई हमसों दुराव दई काहे को करति है । हितुन को होत सुख हितु की सुने तें बात तिनहू तें सुंदर रुखाई क्यों धरति है ॥ एकु तनु एकु मनु एक जीव एक प्रान आपुस मैं दोउन की एक सी अरति है । पूछति हौं कान्हजब कैसो कहा कौन कब अनजाने कैसी होय औझकि परति है ॥

अथ कुलटा – दोहा ।

निसदिन जाको रतिकथा सदा काम सों काम ।
मीत अनेकनि सो रमै कुलटा ताको नाम ॥७५॥

यथा ।

अंचल डारे रहै अलबेली दृगंचल चंचल है चपला तैं । सुंदर नैन को सैननहीं मै अनेक अनागत आनति घातैं ॥ बैठि झरोखनि

मांझ उतै उझकै दुरिकै मुरिकै मुसुकातैं ।
तौही लौं जीको परै कल जौलौं चलै कछु काम कलोल की बातैं ॥ ७६ ॥

अथ मुदिता—दोहा ।

सुनत भावती बात के फूलै जाको गात ।
ताकों मुदिता कहत हैं जे कविता सरसात ॥

कवित्त ।

लोग बराति गये सिगरे तुम रातिजगी को चली सब कोऊ । सुंदर मन्दिर सूनो यहां अब को रखवारो है ताहि न जोऊ ॥ सासु कही तबही लखि यों लहुरी दुलही घरही यह सोऊ । फूलि गये सुनि बात यों गात समात न कांचुकी मै कुच दोऊ ॥ ७९ ॥

अथानुसयना भेद—दोहा ।

कहत अनूसयना त्रिबिधि तहां एक यह भेद ।
बिनसत ठौर सहेट की जिय मै पावै खेद ॥८०॥

यथा ।

कैसे है कुंज के सुंदर फूल बिराजत पात

जड़ाऊ जड़्यो सो। यामै ता आवति पावतिही पति को रति केलि को रंग धस्यो सो ॥ आये बसन्त बयारि बहै अब तो यह देखिये गो उगस्यो सो। सोचति यौं पुनि पात झस्यो मुख ह्वै गयो प्यारी को पात झस्यो सो ॥ ८१ ॥

दूजो अनुसयना—दोहरा।

यौं सोचति संकेत ठौर को आगे होय न होय।
दूजो भेद अनूसयना को यह जानै सब कोय ॥

यथा—सवैया।

सासुरे को चली बाहिरो बाग बिलोकतही अँखिया भरि आई। जानतिही जु सखी जिय को तिन कान मै आनि तिहीं समुझाई ॥ देखि बिना पहिलेही भली रति केलि के ठाहर को पछिताई। जाति जहां हौं तहां पुनि सुंदर मन्दिर सूने घनी अमराई ॥ ८२ ॥

तीजो अनुसयना—दोहरा।

पिय आवै संकेत ठौर तें, तिय अटकार तें जानै।
न गई हौं पछिताइजु तीजो यौं अनुसया बखानै*॥

* यहां दूसरे और चौथे चरण में १२ मात्रा है।

यथा ।

हरि आये जबै सिर फूल धरे पकरें कर सुंदर कोंप नई । तब नागरि जानी कि बाग मैं है मुरझाय रही अनुरागमई ॥ पछितात मुतो मनहो मनमांह कहै सुधि काहू न मोहि दई । वह ठौर है खेल कों लाल गये री कहा कहिये अलि हौं न गई ॥ ८५ ॥

अथ सामान्या लक्षण—दोहरा ।

ताको सामान्या तिया कहैं महाकविराइ ।
जाकोमनमिलिसबी नरनिसों धनलीजे उपजाइ॥

यथा—दोहा ।

लटकि मटकि मुसुकाइ मुरिकरै कटाक्छ सिंगार।
बहुदामनि को दानि जब आयो देखै द्वार॥८७॥

अथ त्रिधा नायिका ।

अन्यभोगदुखिता सुवक्रोक्ति गर्विता आहि ।
मानवती पुनि तीसरी कहैं महाकवि चाहि ॥

अथ संभोगदुःखितालक्षण—दोहरा ।

पियरति करीजाय तियसों ताहिदेखि अनखाइ ।
सुवह अन्यसंभोग दुःखिता कहैं महा कविराइ॥

यथा ।

बिथुरी अलक नैन रस भरे झलकत झपकत पलक वै औरै छबि छाई है । अदलि बदलि गये भूषन सकल कहीं सुंदर अधर मै न धरति ललाई है ॥ जगर मगर जोति ऐसी अंग अंग होति कंचन की छरी मानो आगि मैं तपाई है । मै तो ही पठाई सुधि लेन वा कसाई की सु दूती दुखदाई देखु जैसी होय आई है ॥

दोहा ।

कहुं वक्रोकति गर्बिता ताको दुविध विवेक ।
प्रेमगर्बिता एक है रूपगर्बिता एक ॥ ९१ ॥
जाकै पिय की प्रीति को जिय में होइ गुमान ।
प्रेमगर्बिता नारि को सुंदर यहै बखान ॥९२॥

प्रेमगर्बिता— यथा ।

तिय तेरोई कन्त भलो जो निरन्तर भूषन तेरे बनावतु है । हम कौं तो हमारे है प्रीतम को पन ऐसो जहीं ढिंग आवतु है । जब सुंदर हौ गहनौं पहिरौं तब यौं कहि कै उतरावतु

है। तुव मूरति सों मेरे नैननि को इतनोउ न अन्तर भावतु है ॥ ९३ ॥

रूपगर्विता लक्षण—दोहा।

अपने तन के रूप पर जो नारी गरवाइ ।
रूपगर्विता नाइका ताहि कहैं कविराइ ॥९४॥

यथा ।

आनन हमारे के तमासे सुनि सुंदर यों चुंवन करत कान्ह क्यौंहू न अघात हैं। निरखि निरखि आंखि दूनो दूनो ललचात चाहत चकोरनि के लोचन लुभातु हैं ॥ और सुनो कमल के भोरे भौंर दौरत हैं बैठिवे कों आस पास आनि मँडरातु हैं । काटैं मति अधरनि या डर तैं मेरो आली तिनहिं बिडारत सु हाथ रहि जातु हैं ॥ ९५ ॥

अथ मान वर्णन ।

पिय अपराधी जानि तिय रूठै रूखी होइ ।
ता समये के रूप कों मान कहैं सब कोइ ॥९६॥
लघु मध्यम गुरु कहत हैं तीन भांति को मानु।
ज्यौं उपजै जैसै मिटै त्यौं सब करौं बखानु ॥

अथ लघुमान—दोहा ।

और नारितन देखतहिं पिय को जो अनखाइ ।
यौं उपजै लघुमान कछु ख्यालहि मैं मिटि जाइ ॥

यथा—सवैया ।

पिय देखत देखें ज्यों और तिया दृग त्यौं
तिया को तहीं बदलें । हरि जान्यो कि मा-
नवती है भई इहि भांति मनावन को बिरले ॥
कहि सुंदर चातुरी सों कियो गान पै जानि कै
तान मैं चूकि चले । न रह्यो गयो बोलि उठी
तजि मान कह्यो हँसि सीखे भले जू भले ॥८८॥

अथ मध्यम मान—दोहरा ।

और नारि को नाउं लेइकै बातैं करै सुजानु ।
यौंसुनिहोइतियातकिमानिनिसोकहिमध्यममानु

यथा - सवैया ।

बैठे हे पीउ पिया पलिका कछु काम क-
थानि को भेद उचार्यो । सुंदर मोहन जू मुखतें
इक नागरि नारि को नांउ निकार्यो ॥ प्यारी
दई सतराइ करोटु तर्योनु को भाउ तहां जु

निहार्‌यो । मान के भार भर्‌यो लटक्यो रथ मानो मनोभव को कर मार्‌यो ॥ १ ॥

बात करत को मान यथा—सवैया ।

आये मुरारि उठी कहि नारि क्यों मोसो मिलावत हो मुहँ को अब । जानों हो आनति नाहिनै वासों है बातनि कोने मैं जाइ जुरे जब ॥ प्यारी सों प्यारे कह्यो करजोरि के तेरी सों तेरी सी पूछति हैं सब । सुंदर सौंह के बोलत यों ततकालही मान तज्यो तरुनी तब ॥२॥

अथ गुरुमान – दोहा ।

पियआवै रतिअनतकरि तियलखिचीन्ह रिसाइ ।
उपजत है गुरुमान तहँ छूटै पकरे पांइ ॥ ३ ॥

लाल के भाल लग्यो लखि जावक पावक से भये नैन प्रिया के । नाह निहारि निहोरन लागे नये दृग नेक तजु न तिया के ॥ सुंदर पाइन प्यारो पर्‌यो त्यों गये बढ़ि ऐसे हुलास हिया के । फूलि गयो मनु भूलि गई रिस टूटि कै बन्द गये अँगिया के ॥ ४ ॥

अथ अष्टनायका वर्णन· दोहा।

उत्तम मध्यम अधम अरु दिव्यादिव्य विवेक ।
ऐसे बरनत नाइका बाढ़े ग्रन्थ अनेक ॥ ५ ॥
यातें यह संक्षेप सों सुंदर कियो विचारु ।
बरनत आठो नाइका सिगरे रस को सारु ॥६॥
प्रोषितपतिका खंडिता कलहंतरिता नाम ।
विप्रलब्धउत्कंठिता बासकसज्जा बाम ॥ ७ ॥
स्वाधिनपतिका नाइका अभिसारिका गनाइ ।
आठ प्रकार जु भेद यह कहै महा कविराइ ॥

अथ प्रोषित लच्छण --दोहा।

जाको कंत बिदेस को गमन कियो जो होइ ।
पियबिनव्याकुल तियजुतब प्रोषितपतिकासोइ॥
प्रोषितपतिका नारि की रीति कहैं कविराइ ।
दसों अवस्था देह मैं व्यापत जाकै आइ ॥१०।
मुग्धाप्रोषितपतिक को बिरह न परगट होतु ।
ज्यौं घटमधि के दीप कौं भीतरही उद्योतु ॥

मुग्धा प्रोषित — यथा ।

परदेस कौं लाल चले इहिँ हाल है बालकौं

कालिहि के बिकुरे। मनही मन खेदु न दीजिये भेद कराहि के तेल लों होय चुरे ॥ अँसुवा भरि आवत है बरूनी लों सकोच तें भीतर कों यों मुरे। कुलवंती के जैसे कटाच्छ चलैं चलि कै पै दृगंचलही मै दुरे ॥ १२ ॥

अथ मध्याप्रोषित—कवित्त।

सुंदर हौं गई वृषभान के विलोकि आई वैरिन कों बाढ़ी विथा विरह बलाय की। भूलि जात खान,पान रूपरंग आन आन मानस की चेतना न होत चित चाय की ॥ काल्हहीं चले हैं कान्ह मथुरा कों माई आजु ऐसी गति भई दई राधिका के काय की । बोलनि है सोली अवलोकनि लजीली कैसी ह्वै गई है ढीली पग जेहरि जराय की ॥ १३ ॥

अथ प्रौढ़ाप्रोषितपतिका—सवैया।

प्रीतम गौनु किधौं जिय गौनु कि भौनु कि भारू भयानकु भारो । पावस जावकु फूल कि सूल पुरंदर चाप कि सुंदर आरो ॥ सीरी

बयारि किधौं तरवारि है बारि दवारि कि बान बिसारो। चातक बोल कि चोट चुभै चित इंद्र-बधू कि चकोर को चारो ॥ १४ ॥

अन्यच्च—कवित्त।

ऊधो जू सँदेसो नाहि कह्यो जाइ कहा कहैं जैसी करी कान्ह तैसी कोऊ न करतु है। जीभि तो हमारे एक कहां लगि कही परै जीमें जितो कहौं तितौ क्यौंहू ना सरतु है॥ द्वारिका बसतु हरि सुंदर समुदही मै ढूहौ पर बाढ़ जाइ सिंधु मै परतु है। जानि है वे जमुना के जलही तें जाको ज्वाल जलधि में पर्यो बड़-वानल जरतु है ॥ १५ ॥

अथ परकिया प्रोषितपतिका लच्छण-दोहरा।

मीतचल्यो परदेसबिरह की, बाढ़ जु बाल दुरावै।
सो परकीया प्रोषितपतिका सुंदरनारि कहावै॥

यथा—सवैया।

लीजतु है भरि ऊँचे उसास तो आवत हैं उरते न उरे। भीतरी ओर के नैननि के अँसुवा

पुनि नीचेहि कों निचुरे ॥ सुंदर चाहति बात कह्यो अबरा मुख तें मुखही कों मुरे । दीन दयाल चलै है इतो दुख देखत ऐसे दुरेई दुरे ॥

सामान्या प्रोषितपतिका— दोहरा ।

बिछुरे पीतम दाम लेन कों गौं सो बिरह जनावै ।
नगरनाइका प्रोषितपतिका सो वह नारि कहावै ।

यथा — दोहा ।

गनिका बिछुरे कन्त के मिसुकरि दृग भरि लेइ ।
प्रेम जनावै या लियें ज्यों आये धन देइ ॥१९॥

अथ खण्डिता —दोहा ।

अनत मानि पति रति कहूं आवै जाके धाम ।
देखि चिन्ह अनखाइ तब सुकह खण्डिता बाम॥
रीति खण्डिता नारि की कहैं महाकबिराइ ।
रूठि रहै चिन्ता करै चुप ह्वै रहै रिसाइ ॥२०॥

सवैया ।

नाह की छाती मै देखि नखछत नारि नवोढ़ कह्यो पुनि ऐसें । सुन्दर बागें की चोलो में भूलि कै ल्याये हो चन्दकला धरि कैसें ॥

खेलिबे कों हमकों यह देहु जु यों सुनिकै हरि दौरि हरैसैं। लाड़ लई उर सों हँसि यों गसि दोऊ रहे कसि राखिये जैसैं ॥ २२ ॥

मध्या खण्डिता—सवैया।

आये कहूं रति मानि कै मोहन भूषन भेद सबै बदले हैं। यों पिय कों तकि रूप तिया तऊ बोली कछू न बुरो कि भले हैं॥ आँखिन बीच तें आंसू गिरे कहि सुन्दर काजर सो मसले हैं। सो छवि यों अरविन्दन तें अलि के मनो चेटुवा छूटि चले हैं॥ २३ ॥

प्रौढ़ाखण्डिता—कवित्त।

कानन कानन तुम डोलत सुजान कान्ह आनन की आभा आनि भांति पेखियतु है। बिन गुन माल उर धरी है गोपाललाल आंखैं लाललाल कौने लेखि लेखियतु है॥ सुन्दर अधर पर पीक की लसति लीक बीच कारे काजर की रेख रेखियतु है। इते पर कहत हौ देखो तब कहो ए जू और आगि लाय का दिया लै देखियतु है॥ २४ ॥

जागे कहूं रस पागे कहूं दृग लागे कहूं तुम ह्यां अजहूं हो। घात कहूं अरु वात कहूं चलि जात कहूं चितये कितहूं हो॥ काहे को सुन्दर सोहन खात कहूं हठरात भ्रमात कहूं हो। सांझ कहूं अधरात कहूं पछिरात कहूं भये प्रात कहूं हो॥ २५॥

परकीया खण्डिता—सवैया।

आये कहीं रति मानि कै मोहन मोहनी देखि भई मनहीनी। सुन्दर दोष तुम्हें न कछू विधि मेरे ललाट मैं यों लिखि दीनी॥ बैर कियो सिगरे जगसों तुमसों हित सो तुमहूं यह कीनी। सुन्दरि यों इतनो कहि कै दिढ़ सांस लियो अँखिया भरि लीनी॥ २६॥

सामान्या बनिता खण्डिता—दोहा।

नगरनाइका खण्डिता ताकी है यह बात।
रूठै खीझै करिजु कछु लीवेही को घात॥२७॥
पति आये रति अनत करि देखि रिसानी नारि
पकरि हाथ पहुचानि सों पहुंची लई उतारि॥

कलहन्तरिता लक्षण दोहा ।

पहिले पतिसों रिस करै फिरि पाछे पछिताइ।
कलहन्तरिता नाइका कहैं महाकविराइ॥२९॥
कलहन्तरिता नारि की रीति यहै भ्रम तापु ।
ऊँचो लेइ उसास भरि इन्द्री विकल प्रलापु॥३०॥

मुग्धा कलहन्तरिता कवित्त ।

लखि लाल लजाइ रही ललना कहि सुन्दर बैठि अलीगन मैं । हरि हारे बुलाइ न बोली जबै तब वेऊ गये उठि कै बन मैं ॥ कारतै इतनी तो करी पहिले पुनि कैसी तची है तिया तनमैं । कहि कै न सकै सखिहूं सों कछू पछिताति महा मनही मन मैं ॥ ३१ ॥

मध्या कलहन्तरिता यथा ।

आये जादोराइ दोऊ लोचन रहे लजाइ कह्यो समझाइ मैं न मान्यो तिहि छिन है । फिरि गये पति हों तो पछिताति इहि राति रतिपति सुन्दर तचायो तनु तिन है ॥ कहा कहूं आली कछु कहिबे की नाहीं जैसी लाज

काम दुहूं मिलि मोको करी दून है। बोल्योहु न जात अनबोलेहु न रह्यो जात बोलै अनबोलै दुहूं भांतिन कठिन है ॥ ३२ ॥

प्रौढ़ा कलहन्तरिता—यथा।

सौंहि करी कोरि कोरि सुन्दर कितो निहोरि ठाढ़े भये हाथ जोरि जैसें होत चेरो है। कैसी २ भांतिन मनाइ हारे मोहन जू मान्यो नहि हियो भयो काठ तें करेरो है ॥ फिरिगये पीउ जब तरसन लाग्यो तब महादुख पाइ अब सोचत घनेरो है। पहिले तो तैसो भयो कैसो है अनैसो यह नौज लगे ऐसो हिये जैसो हिय मेरो है ॥ ३३ ॥

परकोया यथा।

नित ठान्यो अठान जिठानिन सो पुनि सासु को केती रिसाइ सही। टनतूल गनी सब सौतिन को ननदी को अदीन ह्वै दाह दही ॥ इतनो कियो जाके लिये हम सुंदर ताहू सों आजु हौं रूसि रही। सखि सोचत हौं तब

को चित मै विधि की गति जाति कछू न कही ॥ ३४ ॥

सामान्या लक्षण—दोहा ।

मीतदानि बहुद्रव्य को रिसि करिदियो रिसाइ।
जात रह्यो पछितात पुनि ब लई माल कुड़ाइ॥

विप्रलब्धा लक्षण – दोहा ।

पहुंचे ठौर सहेट को पियहि न पावै नारि ।
ताहि विप्रलब्धा कहैं पण्डित लोग विचारि ॥
रीति बिप्रलब्धानि को आंसू ऊँचो सांस ।
देइ सखीन उराहनो चिन्ता विकल उदास ॥

मुग्धा विप्रलब्धा—सवैया ।

सोहनि कै नवला को सखी बन को बहकाइ लिवाइ गई है । कुंज की देहरी ठाढ़ी करी लै ढकेलि कै भीतर ठेलि दई है ॥ कुंज बिहारी निहारे उहां न तहीं वह चौंकि चकी चितई है । सुंदर देख्यो सखी तन ऐसें जू आंखिनहो मैं सरोस भई है ॥ ३८ ॥

मध्या विप्रलब्धा कवित्त ।

घटा घहराति बीजुरी न ठहरानि उठि आई है हरबराति ऐसी मेघ भर मैं । काम की चपेट लिये लाज की लपेट तहां हरि सौं न भई भेट ह्यां सहेट घर मैं ॥ जकी सी रही है तकि सुंदर अचंभो अति हली न चली न बूड़ि गई सोच सर मैं। आधी आधी आखिन सौं आला-कति आलीतन आधी बात आनन मैं आधि-क अधर मैं ॥ ३९ ॥

अथ प्रौढ़ाविप्रलब्धा – सवैया ।

उठि आई ही देखन कौं पिय पास बनाउ बन्यो सुनि कै घर को। कहि सुंदर भीतर जाय जो देखै तो खोजु नहीं कहुं कान्हर को ॥ दृष्टि बीच तो बान कमान गहे करतानि उठ्यो अरि संबर को । जब जान्यो बचाउ न क्योंहूं सखी तब ध्यान धर्यो हिय मै हर को ॥ ४० ॥

अथ परकीया विप्रलब्धा – सवैया ।

अति आनन्द सो उठि आई प्रिया पिय

देख्यो न भीतर कुंजनि है । तिय लेत उसास बिदा ह्वै चली अलि सों कहि कै इनि बातनि है ॥ कहि सुंदर तोसों कहा लरिये जिन ऐसी करी सखि तू धनि है । सिसु आजु तो सौसी के न्योते को हो फिरि ऐसो बनाव नहीं बनि-है ॥ ४१ ॥

अथ सामान्या बिप्रलब्धा – दोहा ।

करि सिंगार बनि ठनि बहुत गई मीत के गेह ।
मिल्यो न पिय पायो न धन याते ब्याकुल देह ॥

अथ उत्का लक्षण – दोहा ।

काहे तें आयो नहीं पिय सहेट के थान ।
यौं चिंता जु करै सुतिय उत्का जानु सुजान ॥
कांपैं रोवैं तन तपैं अति अंगिराइँ जंभाइँ ।
रीति यहै उत्कानि की सखि सों कहैं सुभाइ ॥

मुग्ध उत्का – यथा ।

काहे तें न आये कान्ह काहू कामिनी नै कहूं काम की कल्लोलनि मै राख्यो किधौं बोरि है । सोचति यों मनही मैं सुंदरि नवल नारि

कैसेहूंधौं विधि आजु कंत को बहोरि है ॥ ऊँचे न उसास ले सकै न ऊँचे देखि सकै पूछे क्यों सखी सों ऐसी इहां लौं लजोरि है। सब की बचाइ डीठि चातुरी सों पौरि तन नैननि की कोरनि सों चितई मरोरि है ॥ ४५ ॥

अथ मध्याउत्का यथा—सवैया ।

बातनि गीतनि सों अटक्यो कि मिली तिय कोऊ रह्यो रमि ताही। और तो चूक न सुंदर वा दिन मै कह्यौ ओठनि लागी है स्याही ॥ आयो नहीं सखि बूझिये कैसी कहा मन देत है तेरो गवाही। चोप घटी कि मिटो चित चाउ कि आलस नींद कि बेपरवाही ॥ ४६ ॥

अथ प्रौढ़ा उत्का यथा – कवित्त ।

खेलत सखानि साथ गये रहि ब्रजनाथ कि धौं और नारी हाथ कहूं कोऊ परी है। हांतो कियो हित किधौं गान माहि बूड्यो चित सुंदर कबित्त माहि कहा जी में धरी है ॥ असगुन भयो किधौं कछू और ठाठ ठयो किधौं काहू

मतो लयो दैके मति हरो है । और बार आवती सवार मेरे वास माहि आजु धौं अवार क्यौं कुमार कान्ह करी है ॥ ४७ ॥

अथ परकीया उत्का—सवैया ।

सकुची न सखीन सौं सौतिन सौं सपनेहू न सासु की कानि कहूं । कुनुवानि की तीछनि सौं केहु भांति डराए ते हौं न डरी कबहूं ॥ कवि सुंदर नंदकुमार बिना तन की तनकौ नहि चैन कहूं । हरि के हित मैं तो करी इतनी हरि कौनो जु आये नहीं अजहूं ॥ ४८ ॥

अथ सामान्या उत्का यथा—दोहा ।

काहू कौं धन दै बहुत बस ह्वै बस्यौ विचित्र ।
जानति हौं आयौ नहीं यातें अजहूं मित्र ॥

अथ वासकसज्जा लक्षण—दोहा ।

निहचै मेरी सेज परि पिय आवैगो आजु ।
वासकसज्जा जानि जा सजै सुरति को साजु ॥
पियमग लखि सखि सो हँसैं पूछैं सजैं सिंगारु ।
ये वासकसज्जानि के कहे सुंदर व्यौहारु ॥५१॥

मुग्धा वासकसज्जा—सवैया।

भौन के कोन मैं भीतर जाइ कै वैठि सिंगार को साज वनायो। सुंदर सीस को फूल दयो सिर मानो मनोज को छत्र तनायो॥ देखति है दुरि द्वारि की ओर न काहू सखीहू सों भेद जनायो। देखि चरित्र नवोढ़ के मैनहूं आपुन को अति धन्य गनायो॥ ५२॥

अथ मध्यावासकसज्जा—कवित्त।

अवहीं ते उवटि अन्हाइ वैठी पाटी पारि आंखैं आंजि एड़ी मांजि पूरि कै सुहागु है। जगर मगर होत आभूषन सव तन सुंदर ज्यों फूलत वसंत वीच वागु है॥ देखति है कहा मुसुक्याइ तेरो जानति हौं पीतम सों सुरत सों अति अनुराग है। अथयो न सूर, सांझ परो न जगाये दीप तेरे तो री माई इहां पूमही तें फागु है॥ ५३॥

अथ प्रौढ़ा वासकसज्जा—सवैया।

वैठी सिंगार के गेह मैं यों अनुराग दियें दुति ज्यों नग में। जेव जगी सिरफूल तें लै

कै जराइ की जेहरि लौं पग मैं ॥ लागि रहे दृग द्वार की ओर लखै कवि सुंदर या ढँग मैं। आवहिंगे पिय जानि तिया यौं बिछाये हैं कंज मनो मग मैं ॥ ५४ ॥

अथ परकीया वासकसज्जा—कवित्त।

दौरानी जिठानी सासु ननद सुआइ सब सुंदर कहानी कहि कैयक छरनि सौं। सारि-का सुवानिहू कै पीजरा उसारि धरे मिसुकै निकासी दासी बाहिर घरनि सौं॥ दियो अं-चराइ कै अँध्यारो कै दुराइ पुनि पौढ़ि रही आइ चुप चाइ कै डरनि सौं। आयो पिय एहो आस पलिका के आस पास दावें निज सांस टकटोरति करनि सौं ॥ ५५ ॥

अथ सामान्या वासकसज्जा—दोहा।

पिय पै कंकन लेउंगी माला सुंदर हार ।
यहै मनोरथ राखि हिय साजै सकल सिंगार॥

अथ स्वाधीनपतिका लक्षण - छन्द।

अतिबस भयो रहे पति जाकै सदा जुपिय

की प्यारी। सबविधि सजै मनोरथ सिगरो छिन भरि होत न न्यारी ॥ ताहि कहैं स्वाधिन पतिका तिय जिय की सदा रसीली। सेखवाग को राग रंग जेहि भावै वह गरवीली ॥५७॥

मुग्धा स्वाधीनपतिका -- सवैया।

सोवत लेत करोट नवोढ़ की नीचे लटैं पलिका तें परी हैं। देखितही हरि सुंदर दौरि कै जाइ कै नागिन सी पकरी हैं ॥ लै दुपटा अपनो अपनें कर पौंछि कै सेजहि मांझ धरी हैं। प्यारे को प्यार निहारि यों रीझि भई परफुल्ल सखी सिगरी हैं ॥ ५७ ॥

अथ मध्यास्वाधीनपतिका – कबित्त।

सखिन मैं बैठौं जहां ठाढ़े होहिं हठि तहां लाजनि हौं गड़ि जाउं नेकुऊन ते टरैं। सेज पर पौढ़ें देहु इत न करोट फेरि राखत लगाइ कहँ सुंदर गरो गरैं ॥ तोहि यातें पूछति हौं तूं तो सबै जानति है कहिधौं सुभाउ हहा हरि कौं हरै हरैं। मोहन के मंदिर मैं कैसी कैसी

सुंदरी हैं सबनि को छोड़ि ऐसी भांति रहिबो करैं ॥ ५८ ॥

अथ प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका—कवित्त ।

चाहैं चित चांप चाइ लोचन रहैं अघाइ सुंदर छड़ाइ रंगु कंजपुंज को लयो । रही नखन छबिछाइ मानिक तें सरसाइ जैहरि जराइ को अनूप रूप है नयो ॥ चौकी पर बैठी आइ सखिन सों फुरमाइ एड़ी उजराइबे कौं ठाठु जबहीं ठयो । देखिये सुभाइ रहै पछिताइ पछिताइ हाइ इन पाइन को झावा क्यौं न हौं भयो॥५९॥

परकीया स्वाधीनपतिका—कवित्त ।

ऐसो भयो रहै लीन जैसे जल मांहि मीन सुंदर अधीन अति काम के रसनि सों । आलिन मैं मिलि आली मै हौं जब चली कालि लाजनि हौं गड़ि गई याकी बिहसनि सों ॥ लाग्यो जाइ जहां जाउँ गनै न कुठाउँ ठाउँ एक भांति को है गाउँ डरों चौजसनि सों । बोलौं सतराइ तब दौरि गहै आइ पाइ कहि धौं कहा बसाइ ऐसे मानसनि सों ॥ ६० ॥

अथ सामान्या स्वाधीनपतिका – दोहा।

रूपवती तरुनीनि पुनजानै सकल कलानि ।
ऐसिनिहूं तजि देतु है धन मोही को आनि ॥

अथाभिसारिका लक्षण – दोहा ।

बोलि पठावै पियहि कों पिय पै आपुहि जाइ ।
सो कामिनि अभिसारिका कहै महा कविराइ॥
रीति यहै अभिसारिका समयसमान सिंगार ।
साहस संका चातुरी लयें करै अभिसार ॥६३॥

मुग्धाऽभिसारिका—सवैया ।

पौढ़े हुते पलिका पर प्यौ मुख ऊपर ओट दिये दुपटा को ।, ल्याई लिवाइ अली नवला कहँ बातें बनाइ अनेक छटा को ॥ जेहरि को खटको जबही भयो सुन्दर देहरी आनि अटा को । अंग अनंगतरंग उठी बन मोर को ज्यों सुनि घोर घटा को ॥ ६४ ॥

मध्याऽभिसारिका – यथा ।

जौलौं हौं न चली तौलौं कैसी करी तला बेली हाहा चलि चलि आली लेहु मोहि ज्याइ

कै। आई उठि मन्दिर कों कौन चौंप चाइनि सों इहां पुनि आइ ढिग रही चुप लाइ कै ॥ बैठि रहो कहा अब गौनाइत कीसी नाईं घूंघट कै सुन्दर सकोच अपनाइ कै। लेइ नहीं हिय के हुलास सब पूरे करि पीतम कों अधर पियूष रस प्याइ कै ॥ ६५ ॥

प्रौढ़ाऽभिसारिका—यथा।

पहिले तो भयो यह कैसो उदो कहि सुन्दर मन्दिर के चहुंओरनि। पुनि आगेहू आय रही समुहाहि रह्यो भरि गेह सुगन्ध झकोरनि ॥ बिछिया घुघुरू झमकै लहँगा की सुनी त्यों तहीं मधुरी घमकोरनि। मुसुकाति पै आपुहि आइ गई है जिवाइ लिये तिरछी दृग मोरनि ॥ ६६ ॥

परकीयाऽभिसारिका—सवैया।

स्याम को ल्याई सनेसो सखी सुनि कै तन सुन्दरि के रस बाढ़े। चौंधि के भूषन खोलि धरे बिछियान के बैग दै काँकर काढ़े ॥ घूघरि की धरि डोरी कसी अँगियाहु के बन्द कसे

गहि गाढ़े । जाइ रही सुतहां वह प्यारी जहां हरि हेरत है मग ठाढ़े ॥ ६७ ॥

पी पैं चली बिछियानि के काँकर काढ़े न चौंधि के भूषन छोरे । को सुख देइ जो काहू सों पूछों सखी तें मिलौं जिनके मन भोरे ॥ जाति कहां हो लगाये कहा सुधि यों जब पूछि-हैं नैन मरोरे । सुन्दर एइ परोसिनि सों कहि देहिंगी दौरि सुगन्ध के डोरे ॥ ६८ ॥

दिवाऽभिसारिका—यथा ।

आहट पाइ गुपाल को बाल गली मह जाइ कै धाइ लियो है । बातनि ऐसें गये जुरि कै न गन्यो तहँ मानस कोउ बियो है ॥ सुन्दर हौं तो रही चकि सी तकि दम्पति को अति गाढ़ा हियो है । चाहिये राति किये दुरि यों सुदुहू मिलि कै दिनही मैं कियो है ॥ ६९ ॥

कृष्णाऽभिसारिका—कवित्त ।

कारी घनघटा भारी पहिरि लै कारी सारी आंखिन मैं देखि तेरे कारी कजराई है । का-

रोई कुरंगसारु घसिकै लगाउ अंग कारे चोवा कंचुकी सुभलेही भिंगाई है ॥ कारे पाट सुन्दर गुहाये सब आभूषन कारी बेनी पीठि पर छोरि दै सुहाई है। ऐसे समै ऐसी होइ जाइ मिलि कान्हर सों आजुही तो सिगरी कराई कालु आई है ॥ ७० ॥

चन्द्राऽभिसारिका—कबित्त ।

फूलनि सों गुही मांग चंदन चढ़ाये अंग उमड़ो है मनो गंग सरद के नीर को। सोहत हैं सब तन मोतिन के आभूषन मोतिन की जोति सों मिली है जोति चीर को॥ मुसुक्यात आछी अति दांतन की दिपैं दुति तैसीयै गुराई कहि सुंदर सरीर को। चांदनी सी बाल मिलि चांदनी में ऐसै चली जैसें छीर सिंधु मै चलै तरंग छीर को ॥ ७१ ॥

सामान्या ऽभिसारिका—दोहा ।

सुंदर सकल सिंगार सजि चलीबाल इहि आस।
जाइआजु मनमानतो धन लैहों पिय पास ॥

अथ द्विर्वद्धंसुवद्धं इति न्यायेन पुनः कथनं
दार्ढ्यार्थंस्मरणार्थं वा । दोहा ।

सुन्दर मुग्धा नारि कों लज्जा को अधिकार ।
लाज काम इन दुहुन मिलि मध्याको विस्तार ॥
सो प्रौढ़ा जा नारि में रस को बहुत विकासु ।
जो तिय धीरज धरि रहै कहियत है धीरा सु ॥
जो नारी विनु धीरजहि कहैं अधीरा नाम ।
धीरज धरै अधीरजहि धीराधीरा वाम ॥ ७५ ॥
तिय सुजेष्ठा अधिक हित सुकनिष्ठा लघु जासु ।
परकीया कों सरसई होत न कछू प्रकासु॥७६॥
सामान्या तिय को अहै केवल धन सों काज ।
इहि बिधि भेद तियान के कहैं महाकविराज ॥
अष्टनाइका ज्यों कही त्यों नवमी पुनि होइ ।
जाको पीय विदेस कों चलन कहै तिय सोइ ॥
चाहै चलन विदेस कों छन में जाको ईसु ।
होइ प्रवत्स्यतभर्तृका कह सुन्दर नारी सु॥७९॥
रीति प्रवत्स्यत्भर्तृका तिय की आंसू स्वास ।
असगुन होइ चलै न पिय करत हिये इहि आस॥

अथ मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका—सवैया ।

सुन्दर बालम बात कहूं परदेसनि कों चलिबे को चलाई । बानहु तें अति पैनी अचानक सो धुनि बाल के कान मैं आई ॥ पूछि सकै न सखीन सकोचनि बूड़ि गयो पल मैं जियराई । नीची रही करि जो बहुरों फिरि ऊँचे कों नारि न नारि उठाई ॥ ८१ ॥

मध्या प्रवत्स्यत्पतिका—सवैया ।

भोर भये मथुरा को चलैंगे यों बात चली हरि नन्दलला की । बोलि सकी न सकोचनि तें सुनि पीरी भई मुखजोति तिया की ॥ हाथ टिकाइ ललाट सों बैठी इहै उपमा कवि सुन्दर ता की । देखै मनो तिय आयु के आखर और कछू हैं रहे बच बाकी ॥ ८२ ॥

प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका—सवैया ।

यों मुरझानी सुन्यो हरि गौनु तुषारहनी मनो कंजकली है । सुन्दर सेज सुगन्ध सिंगार बिसारे मनो छली काहू छली है ॥ ह्वै रही

पाहन की पुतरी सी हलाएहुं ते पलमैं न हली है। चाउ न चैन न चेत कहूं जब तें चरचा चलिबे की चली है ॥ ८३ ॥

परकीया प्रवत्स्यतपतिका – सवैया ।

हरि जू मथुरा को चलैंगे परोक रहैगी जहां पछिली रतियां । वृषभानुसुता बनितान मैं बैठी अचानक यौंही सुनी बतियां ॥ तिहि बार जो बालमै बीती कछू कबि सुन्दर जानै को आन तियां । तन ताहि को जानत कै मन जानत कै यह जानति है छतियां ॥ ८४ ॥

सामान्या प्रवत्स्यतपतिका – दोहा ।

पीतमु चले बिदेस कौं यौं बोली पुरनारि ।
जपिहौं तुहि तेरे बिरह माला देहु उतारि ॥

अथ उत्तमा लक्षण – दोहा ।

अहित करै पिय तिय तऊ तजै न पिय की प्रीति
दूह सुउत्तमा नाइका है याकी यह रीति ॥

यथा ।

पकरे करसौं कर और तिया को लिये फिरै ज्यौं बन दामिनि कौं । इनि भांतिनि सुंदर

कान्ह लखे पुनि कोपु नहो कहुं कामिनि कों ॥
जुग लोचन लाल हैं लालन के चहूं जामनि जा-
ग्यौ हैं जामिनि कों। अपराध भयो अति आवत
या गति भावै तऊ पति भामिनि कों ॥ ८७ ॥

अथ मध्यमा लक्षण—दोहा।

पियकेहितसों होतिहित अनहितअनहित होइ।
ज्यों देखे त्यों अनुसरै नारि मध्यमा सोइ ॥८८॥

यथा—सवैया।

अँग लागे जगे निसि जाके जहां लिये आये
सुगंध की बासु वही । ललना लखि लाल के
पैने कटाच्छनि पीठि दै रूठि कै बैठि रही ॥
कवि सुंदर सौंहैं खरे कर जोरि किती बिनती
जब कान्ह कही । तब राधे कह्यो सखि सों
हँसि कै कहि तूं की भये अब माइ सही ॥८९॥

अथाऽधमा लक्षण—दोहा।

तियसों पीतम हित करै तिय रिसाइ वेकाज।
सो वह अधमा नाइका बरनत हैं कविराज ॥

यथा—कवित्त ।

आवति ज्यों देखी पिय आगे जाइ लई तिय ऊँचे बैठारि कखो आदरु भगति है। सुमन सु-गंध साज सेज के समीप राखि तिहि समै भयो अति सेवक सों प्रति है ॥ सुंदर सवाद जामैं सुधाहू सों ऐसी पुनि बालम के बदन तें बात निकसति है । इते पर बोलै तज पीतम तें सत-राइ झुक झहराइ भहराइ सी उठति है ॥८१॥

इति नायिकानिरूपणम् ।

अथ पद्मिन्यादिकथनं—दोहा ।

अवस्थान के भेद यह आये प्रथम बखानि ।
अब तिय के अँगचिन्हतें जाति चारि जियजानि॥
कहौंपद्मिनी चित्रिनी और संखिनी नारि ।
हस्तिनित्यौं इनि सबनि कौं बरनतहौं बिस्तारि॥

पद्मनी—यथा ।

कमल के फूल कैसी बास अंग सुकुमार कमल सौ जोनि तहां जल तो न लहिये। चंदसो बदन तन चंपक सो कुंदन सो बनी ठनी सब

ठौर जैसी जहां चहिये ॥ भावै देवपूजा सेत वसन सों रुचि हिये लिये लाज मान गति हंस की सी गहिये । थोरो खाइ पिकवैनी बिचक्षन मृगनैनी जामैं गुन सुंदर ए पद्मिनी सु कहिये ॥

चित्रिनी यथा—कवित्त ।

खीन कटि पीन कुच मीन से चपल नैन गजगौन कारे बार मोर की सी बानी है ॥ मधु कैसो गंध जाके सुरत के जल को है लांबी है न ठिंगनो न पातरी न स्यानी है । सुंदर सलोम सुकुमार जोनि मजै तासु जैसें फूल वटुरारो जामैं भर्यो पानी है ॥ रति सों न रति उपभोगही सो रति चित्र संगीत सोभा लियें चित्रिनी बखानी है ॥ ८५ ॥

अथ संखिनी—कवित्त ।

मोटी लांबी नसैं देह तैसैं ऊँची मोटी कटि टेढ़ी चितवनि कुच छोटे छोटो मनु है । जोनि मैं विगन्ध काम जल घन घने बार उताइल चलै चाल गाजत ज्यों घनु है ॥ रातो पट भावै

नख सुरत मैं लावै चारु तातो गात दयाहीन रोसहो सो पनु हैं। दीरघ है दांत हाथ पाइ त्यों बहुत खाइ ऐसे जाके चिन्ह सोइ संखिनी को तनु है ॥ ९६ ॥

हस्तिनी यथा—कवित्त ।

मोटी देह मोटे ओठ भूरे बार गोरी आपु घोरि लाज पेट भरि खात है अघाइ कै । टेढ़े पाइ पाइन की आंगुरी है टेढ़ी सब ठेंगनो सी कूर पुनि बोलै घहराइ कै ॥ काम जल की है गन्ध मद के गयन्द की सी सुरतु न कियो जाइ जासों सुखु पाइ कै । चलै मंदगति गहे कांधे जाके नये रहैं हस्तिनी के लच्छन ए दिये हैं दिखाइ कै ॥ ९७ ॥

इति पद्मिन्यादि लक्षणम् ।

अथ सखी वर्णन—दोहा ।

जासों बात कहै सुनै जिय को वहु विश्राम ।
पास रहै परतीति को कहिये सखी सुनाम ॥९८॥

दोहरा ।

ए हैं कामसखिन के तिय को भूषन बसन बनावै।
देइ उरहनो सिखदै जानै करि परिहासु हँसावै ॥

भूषन बसन यथा—कबित्त ।

जोबन को जोबन सिंगार को सिंगार किधौं रूपई को रूप ऐसे रंग देखियतु है। तेरे अधरान की ललाई लखि लालन के लोचन तो सुंदर सुधासों सीचियतु है ॥ चीर पहिरे तें को धरैगो धीर मेरी बीर मांगहू के चीरत वे हियो चीरियतु है । ज्यों ज्यों कर कांगही लै बारन सँवारति हौ सौतिन की आंखिन करीत दीजियतु है ॥ २०० ॥

अथ उराहनो—यथा ।

काहे ह्वै रही हौ मौन टेव इह परी कौन ननिन सों कहो क्यौ न यों निहारियतु है। खंजन कमल मृगमीनन के जैतवार सुंदर भये तो कोऊ यों बिदारियतु है ॥ चातुर चलाक ज्यों हैं नागर हैं नाइक हैं लायक हैं मानस डिराय

मारियतु है । बांके हैं बिसाल हैं बड़ाई के बड़ हैं तो बिलोकतहीं आगिले कों बेधि डारियतु है ? ॥ १ ॥

लालन के लखि लागत लोचन लाभ कहा ऐसो लोभ लखायें । जोहू की बात दुरै न जहां दृग क्यों निबहेंगे तहां मुकराये ॥ सुन्दर जोबन रूप समै ऐसी को न भई बलि वैस के आये । सीखी चितैबो भलो भई पै चितवो करो और की डीठ बचाये ॥ २ ॥

सिक्षा यथा — सवैया ।

ज्यों लरिकापन मैं बलि आई हौ त्यों अचगरा अजहूं मति डारो । घूघरी की धरि डोरी कसो भलके लहँगाउ को खूंट सुधारो ॥ होतु चल्यो नितही नित सुंदर छाती नितंब पिछाछियों भारो । कौलौं रहोगी भटू अलबेली अहो अबहूं कपरा न सम्हारो ॥ २ ॥

अन्यच्च — सवैया ।

माइके जे अलबेलपने ते बलाइ ल्यों सासुरे

कैसें लहैगी । कीजै कहा अपनो बस है कछु सासु तो चाहै कछोइ कहैगी ॥ सुंदर ज्यों तबही अब त्यों अँखिया भरि लैहो तो काह रहैगी । आई कहां हो बिचारि न देखो इहां वह रीति कहां निबहैगी ॥ ४ ॥

अन्यच्च—कवित्त ।

कौने धौं सँवारी जाहु भीतरही प्यारी वह कोहै बजमारी जिन वाहिर पठाई हो । जा-दिन लगीहो दीठि तादिन तो नीठि नीठि सुं-दर मै बीनती कै बिधि पैं बचाई हो ॥ मंत्रनि पढ़ाइ करि मंत्रनि मढ़ाइ धरि तंत्रनि कढ़ाइ कालि क्योंहू मैं जिवाई हो । कियो कहा चा-हति हो सोई क्यौं न कहो आजु काकी वाट पारिवे कों पाटी पारि आई हो ॥ ५ ॥

परिहास—यथा ।

बिथुरी अलक नैन रसभरे झलकत उठि आई रति मानि रसिक रसाल सौं । पिय के दसन लागे तिय के कपोलनि मैं चौका परे ते

लखि यों बोली अली बाल सों ॥ क्षापसी कहा है रहो सुन्दर उघरि हूह ऐसें कहि पोंछिवे कों भई कछु ख्याल सों । ज्योंही गह्यो गाल आइ त्योंही प्यारी तिरछाइ मुरि मुसुक्याइ मुख मार्यो फूलमाल सों ॥ ६ ॥

नाइका को परिहास नायक सों—सवैया ।

सौंह कहा तुम्हैं गंग की है यह मूंड तो भागीरथी सों भर्यो है। जो कहौ सुंदर पावक सौंह सु पावक तो निज नैन कर्यो है। गौरी कहै सिव सों हँसियों बिधिना हर ना*उ न झूठो धर्यो है। खेलत आजु जुवा मैं अबै तुम दीजिये हार जु मेरो हर्यो है ॥६॥

नायक परिहास नायका सों—कबित्त ।

बंधुजीव फूल की लै पांखुरी लगाई भाल मृगमद लायो ओठ अंजन सों ज्यों फबै । ऐसो रूप किये प्यारो आवत है प्यारी पास प्यारी पेखि रूठि बैठी पीठि दै तहां तबै ॥ काजर

* स्लेष से हरना नाम निकलता है ।

अधर मै न जावक लिलार है न सोहैं बेठोखीझो मति यों कह्यो अली जबै। राधा तो रही लजाइ हँसे हरि हहराइ हँसि हँसि गिरि गईं सुंदर सखी सबै ॥ ७ ॥

दूति सखी।

अथ दूती वर्णन—दोहा।

दूतपने मैं अतिनिपुन सो कहि दूती बाम ।
जोरि देइ बरनै बिरह ये दूतिन के काम ॥८॥

जोरिबो यथा—कवित्त।

सुनौ जू नवोढ़ा सूधें आचरु है जानति ना पिय पास बैठिवे की बात कहा जानी है। मेरे ल्याइवे की लाज कीजो लाल बलि जाउँ आतुर न ह्जो वह अबहीं अयानी है ॥ यहै रस रीति कहि सुंदर रसिक की जु रसही सो मिलि बोलैं बोरी रस बानी है। मैना सो पढ़ाई जब पहर अढ़ाई परतीति मैं बढ़ाई तब क्योंहूं क्योंहुं आनी है ॥ ९ ॥

सोने की सी डार सुकुमार वारे हैं सिवार

सुंदर सुढार कटि मूठी मैं समानी है। मोतिन की माल मोती बेसरि को लेत हाल मोती से दसन मुख मोती को सो पानी है॥ ल्याईं हौं बुलाइ कै बलाइ लेउँ लाल बाल देखत हीं भलो मेरो मानिहो मैं जानी है। नैनसुखदैन चित चैन होत सुनै बैन ऐनमैन मैनका कि मैनहो की रानी है॥ १० ॥

आखिन भौंहन मै मनकी जु खुले निधि सी छबि चातुरता की। हाथनि सों नहि यों करिये मनों पौन तें कापत कोंपलता की॥ देखतही बनि आवै कहा कहों नाही को नारि हुलै जब वाकी। नाही टरै नतियै कवि सुंदर कैसें बसीठी करै कोऊ ताकी॥ ११ ॥

नाइका के पच्छ की दूती—कवित्त।

दीठि सों न जोरै दीठि दै दै बैठै फेरि पीठि सुंदर बसीठी कहो कहा करैं तासों। तिहारे तो लागो जक जाउ जाउ ल्याउ ल्याउ हौं तो फिरि जाती ना तिहारी जो न खाती सौं॥

कोऊ पचो राति दिन निबहै न एकु छिन नेह बिन कैसें कै उँजारो होत बाती सौं। हौं तो थकी जाइ जाइ हाहा खाइ गहे पाइ आपुही मनाइ जाइ लाइ लेहु छाती सौं॥ १२ ॥

नायक के पक्ष की दूती यथा।

तनगि तनैनी करि भौंहन को तानति हौ जिती धीर गही मन तिती तब गहैगो ?। जाही मुख मोसों सतरानी सुनि मेरी रानी सोई मुख काम की कहानी हँस कहैगो॥ सुन्दर सुघर घनश्याम जूको देखें ऐसी कामिनी को जो न काम दही और दहैगो। मेरे तो मनाए तें न मानति हौं लखि लाल, तौ बदौंगी मानिनी जो मान तब रहैगो॥ १३ ॥

लाल अपने पै अलि इतो न रिसैये बलि कहा भयो वाते हँस्यो नेक नन्दनन्दु है। बैठि-यतु बोलियतु हिलिमिलि खेलियतु सुन्दरि यों कीजियतु हिये दुख दन्दु है॥ हाहा देखि सौंहे तोहि कोटि कोटि सौंहे करो ऐसे समें

मान तेरो ऐसो मन मन्द है। कैसो नीको नायक सकल सुखदायक औ कैसी नीको चांदनी औ कैसो नीको चन्द है ॥ १४ ॥

नायका को विरहनिवेदन ।

मेरी आलि आगे कालि टेढ़ी चाल चलिआई ता घरीतें खेलति न बोलति हँसति है । जैसें मीन विनु जल क्यौंहू न परति कल सुन्दर विकल भई बेसुधि ससति है ॥ कहूं डारे रहै मनु नेंकु न सम्हारे तनु रावरे निहारे हरिन्याइ तरसति है । आंखिन मैं भौहनि मैं मुख मुसुक्यानि मै सुठौर ठौर ठगु तेरे ठगौरी बसति है ॥ १५ ॥

नायक को विरह निवेदन ।

कहूं बनमाल कहूं गुञ्जनि की माल कहूं सङ्ग सखा ग्वाल ऐसे हास भूलि गये हैं । कहूं मोरचन्द्रिका लकुट कहूं पीतपट मुरली मुकुट कहूं न्यारे डारि दये हैं ॥ कुण्डल अडोल कहूं सुन्दर न बोलैं बोल लोचन हैं लोल मानो कहूं

हरि लये हैं। घूंघट की ओट ह्वैकै चितयो कि ओट करी लालन तो लोटपोट तबहीतें भये हैं ॥

अथ नायक वर्णन – दोहा।

दुहुन मिले सिङ्गार रस सरस होत है आनि ।
जैसे बरनी नाइका त्यों नायकनि बखानि १७

दोहरा।

सो नायक पति उपपति वैसिक त्रिविध भेद यह ताको। व्याह्यो पति अनव्याह्यो उपपति वैसिक पति गनिका को॥

पतिर्यथा कवित्त।

मग मै परे तैं पग सुन्दर भरैगी डग कोमल कमल भूमि छोड़त है छनको। जिहिंठौर कांटे काठ कांकर परत आनि तिहि ठौर धरत हैं आपने चरन कों॥ जितै छांह सीरी तितै कियें जात प्यारी न्यारी जहां ताप तहां कीजे नीरन से तनकों। गहें रघुनाथ निज हाथनि सों हाथ ऐसें जानकी कों साथ लिये जात चले बनकों॥ १८॥

छन्द।

सब कहत हैं पति नायकहि कवि ज्ञान दीठि निहारि। अनुकूल दच्छिन धृष्ट सठ ये भेद चारि बिचारि ॥ १६ ॥

यथा।

सो अनुकूल जो एकतें दूजियै नारि कहूं सपने नहि जानैं। दच्छिण सो सबको सम देखैं सदा रहैं जासों सबै सुख मानैं॥ धृष्ट बड़े अपराध भयो बरजेहू खिझे रस ठानेहू ठानैं। औ सठ जो कपटी रसकेलि मैं सुन्दर नायक चारयों बखानैं ॥ २० ॥

अनुकूल यथा।

महादेव जूकी जो की जानी हम नीहचै कै आपनेह्न जीतें प्यारी जाई गिरिवर की। पैड़े चले आवैं अरधङ्ग धरे इते पर याहीतें अधिक प्रीति रीति है री हर की ॥ मुण्डन की माल गज खाल व्याल कालकूट दाहिनीघाँ राखत लपट पागि भार की। बांई ओर सुन्दर सिवा के

हित फेरि फेरि सुधा सौं सुधारि धरैं कला सुधाधर की ॥ २१ ॥

दच्छिण यथा ।

दुतिया के दिन चन्द देवता को दरसन देखिबे कों जुरि आई आंगन मैं दार हैं। आभूषन बसन बनाये नाना भांतिन के कीने आन आन अनगनति सिङ्गार हैं ॥ एहि बीच मंदिर के भीतर तें निकसि कै देखी हरि सुन्दर यों सबै इक बार हैं । ऐसैं परी समदीठि सोरह हजार पर मानों मैन हैन नैन सोरह हजार हैं ॥

धृष्ट यथा ।

माखो है फूल की मालनि सो कर बांधिकै त्यौं फिरि चौगुने चाइनि ।सुन्दर बासौं किती खिजिये न तजै तऊ आपने सील सुभाइनि ॥ बाहिरैं काढ़ि दियो दै कपाट हौं पोढ़ि रह्यो पटु तानि गुसाइनि ।जो पल मैं पल खोलि कै देखौं तो पाइते बैठो पलोटत पाइनि ॥ २२ ॥

सठ यथा ।

बोल यहै वृषभान सुता कों सुनायो है कान्हर कीनिहु फेरे । सुन्दर नन्द के मन्दिर भीतर कैसो चितैरु चितेरो चितेरे ॥ राधिका दौरि चली सुनि देखन भेद न जानै गई जब नेरे । पाछे तें आइ गही पिय प्यारीयै लै गयो लङ्कर धाम अँधेरे ॥ २४ ॥

उपपति लक्षण — दोहा

उपपति कहिये जार सों सठता तहँ निरधार ।
कबहूं होय न ताहि ये अनुकूलादि प्रकार ॥२५॥

यथा ।

लागो लेहु लपटाहु लेटि जाहु वेगि होहु मिल मिल रहै दोऊ नेह की हिलग मैं । अधर को रस पियैं चाहत न छुव्यो हियैं आहट के लिये कान्ह मन दियैं मग मैं ॥ सुन्दर हर-बरात उर मैं धरधरात ऐसे हैं डरात अति कम्प कर पग मैं । ऐसे दुरादुर ही मैं सुरत जे करैं जीव सांचो तिन जीवन को जीवन है जग मैं ॥ २६ ॥

अन्यच्च—कवित्त ।

कामही के ध्यान ज्ञान रति के कथा ब-
खान मेरे जान पाये प्रान बातनि जहां जुरैं ।
हाइ भाइ नैन चाइ जान्यो ज्यों लियो जिवाइ
मिलिबे की टाइ घात भांति भांति के फुरैं ॥
सुंदर बिराम वहैं सांकरी गली मैं कहूं आपुस
मैं दोऊ मुसुक्याइ कै चलैं मुरैं । परगट मांझ
वैसे रस कहां पाइयतु जैसे रसचोप चाह होत
है दुरै दुरैं ॥ २७ ॥

वैसिक लक्षण—दोहा ।

जो पति अति गनिकानि सों करै सदा संभोग ।
वैसिक ताकों कहत हैं धीर गुनी सब लोग ॥

यथा—सवैया ।

कुंदन से तन चंद सो आनन कानन मै
मुकुतानि की बारी । देखत आरसी पानन
खात भुजा मनों सुंदर ढारतें ढारी ॥ ऐंठी सी
आंखि अमेठी सी भौहनि पैने कटाक्ष लटैं
सटकारी । छैल छबिलो सु कैसे मिलै छबि
जाकी मैं ऐसी अनेक निहारी ॥ २८ ॥

पतिउपपति वैसिकनि को कविको इहै विचार
उत्तम मध्यम अधम अरु गज होहिं प्रकार ॥

उतमा लक्षण — दोहरा।

रामा रहै रिसाइपीय पुनितिन जतननि कों गहै।
जिनतें रिसमिटिजाइ तियाको उत्तमलच्छन इहै

यथा — सवैया।

आये चले पलिका पै लला ललना की
लखो अँखिया सतरानी। जानी कि रोस भरी
हैं तहां लै महारसिया रस रीतिन ठानी ॥
मांगै जु काहू सहेलिन पै कहि सुंदर सौंधि कि
पान कि पानी। तौ अपने करलै करिकै हरि
दौरत बोलि सुधारस बानी ॥ ३२ ॥

मध्यम लक्षण — दोहा।

जो पिय रूठी नारिसों रस न करै न रिसाइ।
सो मध्यम अटकर लहै तिय के जिय के भाइ ॥

यथा — कवित्त।

ज्यौंही चले आये लाल दीठि भरि देखि
बाल बैठि रही मुह मूंदि जानो कांजकलो है।

आदरु न कछु कियो आगे ह्वै न पीय लियो
बोली न बिहँसि ठौरतैं न चली हली है ॥
कान्हहू न कछू कह्यो जैसे देखो त्यौंही रह्यो
फिरि लागी करन सिंगार बोलि अली है ।
राधिका की यह रीति भांति देखि मोहन की
मनसा पैं आनँद के फलनि सौं फली है ॥३४॥

अधम लक्षण—दोहरा ।

काम केलि को रुठन की तिय, कछू विचार न जाके । सो वह अधम लाज डरु होइ न, सपनेहू पुनि ताके ॥ ३५ ॥

यथा ।

जाति चलीही चलीन मैं कालि तहां लखि आइकैं दीबो धका कौं । हौंतो गई गड़ि लाजन त्यौंही हँसी सब ओठन दै अचरा कौं ॥ ऐसी महा अति ढीठ सखी सुनि सुन्दर है यह औगुन जाको । ताकी तूं बात चलावति है सपनेहु न देखिये री मुंह वाको ॥ ३६ ॥

अथ मानी चतुर ।

ये दोऊ मानी चतुर बरनत हैं कविराइ ।
सठ के इनके एक से जानो सबै सुभाइ ॥३७॥
इक मानोनिज रूपके इक मानी निज गोंहि।
सुन्दर यों द्वै भांति के मानी नायक होंहि॥३८॥

रूपगर्वमानी यथा ।

आपुस मांझ अलीन मतो करि आजु हँसी हरि सों इन ठानी । बांके बिलोकि बिलास करैं कहि सुन्दर वाकी हजारक बांनी ॥ ऊतरु देइ कहा इनसों वह नेकहु आंखि तरेहु न आनो । मातै गयन्द की नाईं चलो गयो मोहन माई महा अभिमानी ॥ ३९ ॥

अपनो गौं को मानी—यथा ।

प्रीति कछू इन द्यौसनि मैं पिय बाहिरही बहुतै सरसानी । कान्ह कठोर महा मनके हो कही जब राधिकै सुन्दर बानी ॥ आगे न मान बढ़ै इह जानिकै चातुरता तब यों हरि ठानी । मोहनी सों मिसु ऐसो कियो मनमोहन आपुनहीं भये मानी ॥ ४० ॥

चतुर लच्छन दोहा।

बचननि करि करतूति करि करै जु चातुरताहि
ये सिगरे कविराज मिलि भाखैं चातुर ताहि॥

बचनचतुर यथा।

तू तो है महासुजान तो समान कौन आन कहां लौं करौं बखान सुन्दर बनाइ कै। तोही तें पैहौं यह और तें न होय क्योंहू कैसेहूं जो करै कोऊ कोटिक उपाइ कै॥ जैसे मुह आपुनोई आप नाहिं देख्यो जात जौलौं बीच आरसी न देति है दिखाइ कै। तैसे वह प्यारी निसदिन मेरे हिये बसै मिलै तबही तौ जब तूं मिलावै ल्याइ कै॥ ४२॥

पहिले तू जाइ मिसु घालि बोलु चालि देखि जौ सुनैगो कान दै तौ बनौ सब आहियै। जानी को रुखाइ तानी और की लै चौरै ठानी सोई बातें ल्यानी जोई भावै हिय वाहियै॥ ऐसिन को बस कीबो सुन्दर कितोकु काम अति गति मतिन अथाह सिंधु थाहियै। बिगरी ब-

नाइबे को रस उपजाइबे की पिय तें मिलाइबे की भांति ऐसी चाहिये ॥ ४३ ॥

अन्यच्च ।

कञ्जन की लतान मैं गुंजरत अलिपुञ्ज कुंजनि की गलिन मैं धेनु विझुकति है । सुबल सुबाहु सिरीदामा सुनो भोरई ह्वां जैहों हौं न मैया मो पै गैया न रुकति है ॥ चातुरी सौं राधिका कौं सहेट की ठौर कीबो सुन्दर सुनाइ कही सिगरी उगति है । जानै जे न जानै ते यों गोपनि तें कही बात जानत जे जान जानै तिन को टुकति है ॥ ४४ ॥

क्रियाचतुर यथा ।

इतै वृषभानु जू की नन्दिनी है उतै उन आनँद को कन्द नन्दनँदन बढ़ायो है । आपने अपाने दोऊ चढ़े हैं अटानि पर सुन्दर कटाक्छनि को तहां झरि लायो है ॥ प्यारे पूछी कबहि मिलौगी इहि भाइ करि चंपे को लै हार निज कण्ठ मांझ नायो है । प्यारी

दियो उतरु अवधि वदी एहो रीति मुह मूंदि कमल के फूल को दिखायो है ॥ ४५ ॥

अन्यच्च—सवैया।

एक समै दिन मांझ अलीन में बैठीही सुंदर राधिका रानी। आये तहां पिय सैन दई चलि प्यारी चितौनि मैं चातुरी ठानी ॥ सेत असेत कटाच्छ करे तिनसैं इम जोन्ह की भांति है आनी। जानि गये हरि औधि बताई है नैननहीं मैं निसा की निसानी ॥ ४६ ॥

अथ प्रोषित लच्चण – दोहा।

तजि निज तिय परदेसकौं चल्योविकुरि कै होइ।
सुंदरनायक सबनि मैं प्रोषित कहिये सोइ॥४७॥

यथा – सवैया।

बार सेवार से बानी सुधा सी सुधाकर से मुख आछो उजेरो । नैननि हाथनि पाइनि जाकी गह्यो गुन कंजन को बहुतेरो ॥ सुंदर मों हिय माह निरंतर ऐसी है प्यारी पिया को बसेरो । जानतु हौं अपनोई अभाग इते परतापु तपै मन मेरो ॥ ४८ ॥

अथ अनभिज्ञ लक्षण – दोहा ।

जो न भये कबहूं कहूं सपनेहूं मैं विज्ञ ।
इन्द्रायन के फलनि सम ते नाइक अनभिज्ञ ॥

यथा– सवैया ।

मंजन कै अँग रंजन अंजन दै करि खंजन नैन नचावै । अम्बर भूषन बेष बनाइ अनेक वै कंचुकी चोवा चढ़ावै ॥ साजि सिंगारनि सेज बिछाइ कै सुंदर मंदिर सूनो बतावै । बूझत है न इते पर कूर तो और कहा कोउ ढोल बजावै ॥ ५० ॥

अथ नायकसहचर बर्णन – दोहा ।

जो नायक ये मैं कहे तिनके कहों सखानि ।
न्यारे न्यारे नाम करि लच्छन भेद बखान ॥५१॥

जो नायक सों नाइका नीकै देइ मिलाइ ।
नर्म सचिव तासो कहैं राखै सदा रिझाइ ॥५२॥

नर्म सचिव पुनि चारि बिधि सो कविराज बखानि।
पीठमर्द बिट चेटकहि और बिदूषक जानि ॥

अथ पीठ मर्द लक्षण—दोहा।

कोपवती के कोप कों बातनि देहि जुड़ाहि ।
रस पारै पिय सों तियहि पीठमर्द्द कहि ताहि ॥

यथा – सवैया।

और जो कामिनि कोटि कला सों बिलास बिकास करै बहुतेरो। देखै न केहूं तऊ उनको चितु होतु है तेरी रुखाई को चेरो ॥ हा हा बलाइ ल्यों यों सतराइ चितै तिरछै बहुरौ मुंह फेरो। सुंदर तो सतराहटही मैं सुधारसहूं तें सवाद घनेरो ॥ ५५ ॥

अथ बिट लक्षण – दोहा ।

बातैं घातैं काम की जानैं सकल कलानि ।
दूतपने मैं अति निपुन ऐसे बिटहि बखानि ॥

यथा – सवैया।

काहेकों दूती बुलाइ पठाई निसा यह खो-वति हौं अरु खोई। आपुनही चलिये हिलिये मिलिये करिये मन आनंद जोई ॥ छाती सों लाल लगाइ कै राखिये सुंदर ज्यों अंगिया पर

तोई । बीच की बीच है बीच न पारिये मैं जो विचार्यो विचारिये सोई ॥ ५७ ॥

अथ चेटक लक्षण—दोहा ।

जिन बातनि तैं पिय तियहि बाढै सुंदर प्रीति।
तिन बातनि मैं अतिचतुर यह चेटकु की रीति॥

दैव संजोग तें आइ जुरे जुग कुंज मैं कान्हर राधिका रानी । खेलैं न बोलि सकैं कहि सुंदर मौन ह्वै बैठि रहे चुप ठानी ॥ मेरो सकोच कियो इन दोउन चातुर चेटक यों जब जानी । या मिस आपु उहां तें उठ्यो जमुनातट जात हौं पीवन पानी ॥ ५८ ॥

अथ विदूषकलक्षण—दोहा ।

सुंदर खेलत हँसत कै कछू विचार न जाहि ।
कूटि करै सबकी सदा कहैं विदूषक ताहि ॥६०॥

यथा—सवैया ।

आपुहि कुंज के भीतर पैठि सुधारि कै सुंदर सेज बिछाई । बातैं बनाइ अनेकन भांति की माधौ सौ आनि कै राधा मिलाई ॥ आली

कहा कहौं हांसी की बात विदूषक जैसी करी है ढिठाई । जाइ उहां पिछवार उतै फिरि बोलि उठ्यो वृषभान की नाईं ॥ ६१ ॥

इति नायकसखाकथनं ।

अथ अनुराग—दोहा ।

कै देखे तें कै सुनै चित को लागै लागु ।
तासों कबिजन कहत हैं द्वैविधि को अनुरागु ॥

दृष्टानुरागो यथा—सवैया ।

चाइ सों चोप सों चाहन सों चित हो चिहुंट्यो जिन सैननिही सों । सुंदर जाके रहे रस पागि सुने तें सुधारस बैननही सों ॥ बैठी ही बाल अलीन मैं लाल चलो ढिग ह्वै लखि सैननिही सों । डीठी कपोलनि छ्वै निकसी यों कियो मनु चुंबन नैननिही सों ॥ ६२ ॥

श्रुतानुरागो यथा—कबित्त ।

झांकति झरोखनि मैं देखिबे की तलाबेली तबही तें तरुनी को ताप तनु तयो है ।

पान न कपूर खाइ कछू न सुहाइ ताहि सौंधे बगराइ बिसराइ सब दयो है ॥ मेली है ठगोरी जानो ह्वै गई हैं बौरी गहि बहै जक रही गोरी वहै ध्यानु लयो है । जा छिन तें कान्ह की निकाई तू बखानि आई ता छिन तें माई वाको ऐसो हालु भयो है ॥ ६४ ॥

अथ दर्शन – दोहा ।

स्वप्नचित्र परगट दृगनि दरसन तीन प्रकार ।
तिनके सुंदर कवि कहैं न्यारे कै व्यौहार ॥६५॥

स्वप्न दर्शन यथा – कवित्त ।

आली आज सपने मैं देखे हैं री कान्ह ऐसें ठाढ़े बृषभान जू की पौरही तें भिरि कै। तेहि ठौर तो न कोऊ येई देखियत कहूं तुम हम सब मिलि बैठीं आइ घिरि कैं ॥ कहत हैं गोमती के तीर ह्वां न रह्यो गयो जमुना को ढूंढ़ि सुख सुंदर सुमिरि कै । गोपिका न कुंजन विलास रास के न यातें द्वारिका तें छोड़ि आये ब्रजही को फिरि कैं ॥ ६६ ॥

चित्रदर्शन यथा—सवैया ।

देखि चितेर में ठाढ़े हौं कान्हर टेढ़े भये मुह नारि मुरायें । कैसे बजावत हैं मुरली तिरछे तकि भौंह सो भौंह जुरायें ॥ चोरी की टेव इहां लौं परी यह राखिये बात कहां लौं दुरायें । मोहन मूरति सुंदर सूरति चित्रहू में चित लेत चुरायें ॥ ६७ ॥

सचात दरसनं—कबित्त ।

उमंग उछाह उर आनन को ओप चित चातुरी को चाव चढ्यो तेज तन तबही । मिलो रसरंग रिद्धि दरसु सकल सिद्धि पाइ नवो निद्धि जे निकाई और सबही ॥ मेह सो उघरि गयो कुहर सो फाटि गयो नैननि को उदै भयो सूर आजु अबही । जी मै जीव आयो सुख अंग अंग छायो इह दरसन पायो साहिजहां जू को जबही ॥ ६८ ॥

अथ शृंगाररस भेदकथनं—दोहा ।

द्वै बिधि को शृंगार है कहत सबै कबि लोग ।
प्रथम जानि संजोग कों बरनों बहुरि बियोग ॥

संयोग यथा — कवित्त ।

एक समै मंदिर मैं रमनि मैं स्याम रमैं देखतही मैनहूं को मैन सरसतु है । एकन को भेटि एक लेतु हैं लपेटि पुनि एकनि चपेटि कुच ओठ परसतु है ॥ छिरकै गुलाव सों गुपाल ज्यू गुवालिकानि सुंदर सुरूप वह ऐसैं दरसतु हैं । मेरे जानि फूली फूली ललित लतान पर मंद मंद बूंदनि सें मेह वरसतु है ॥

दोहा ।

या संयोग सिंगार मैं उपजत हैं जे भाव ।
तिनके लच्छन भेद गुन वरनौं सकल वनाव ॥७१॥

अथ भाव ।

सुंदर सूरति देखि सुनि चित मै उपजै चाव ।
प्रगट होइ दृग भौंहतें ते कहियत हैं भाव॥७२॥

यथा ।

नांउ लियो यह जहाँ पातिसाह साहजहाँ अंग अंग तहाँ मैनमौज सरसानी है । फेरि करि नारि नेक दाँत सों अधर दावि तिरछौ चितै कै पुनि मुरि मुसुकानी है॥ लागी भू लिखन वायें पाँय के अँगूठा सों सुअनौट की छवि

सो पैं जाति न बखानी है । करि रस रीति जानो बैठी रति कों है ओति वाके चित प्रीति इहि भाँतिन तें जानी है ॥ ७३ ॥

अब सात्विक भाव ।

स्वेद कम्प स्वरभंग ए स्तम्भ विवर्न बनाव ।
रोमहर्ष अश्रू प्रलय आठो सात्विक भाव ॥७४॥

यथा ।

लोचन सजल चिलबिचल बचन मुख चरन जुगल नेक टरत न टारे हैं । पीरी परि आई कहि सुंदर कपोलनि मैं काँपत अधर जानौं सुधा सों सुधारे हैं ॥ स्वेद ह्वैकै भीज्यो तनु पुनि रोमहर्षनु लीन ह्वैकै रह्यो मनु गुनन सम्हारे हैं । छिनही में होइ गई आली आन हाय जैसी जानति हौं कहूं ब्रजनाथहि निहारे हैं ॥ ७५ ॥

दोहा ।

जे संजोग सिंगार की करनी उपजै भाव ।
ते किलकिञ्चित आदि दै कहिये षोरह हाव ॥

किलकिञ्चित विभ्रम ललित हेला लीला हाव।
विहृत कुट्टमित मद तपन मौग्ध्य्रा वरनि बनाव॥
मोट्टायित विच्छित्ति कहि पुनि बिव्वोक बिलास।
विच्छेप सहित एह सब कीने कविन प्रकास॥

अथ किलकिञ्चित।

आँसू रिस डर बिकलता एकहि साथ जु होइ।
कंपहँसनिपियतनतकनिकिलकिञ्चितकहिसोइ॥

यथा।

गौनो भयो दिन द्वैक भये कह सुंदर नेह दुहू मै नवीनो। खेलत काम कलोलनि मै ललना को सुरूप लला लखि लीनो॥ दोऊ उरोज दबे तिहिं कै तब एकहि वेर सवै दुह कीनो। रोई रिसानी डरी थहरानी चली अकुलानी चितै हँसि दीनो॥ ८०॥

अथ विभ्रम।

छिन मै भूषन पहिरि कै छिन मे धरै उतारि।
छिनमै रस अनरस छिनक विभ्रमयौं सुनिहारि॥

यथा।

छिनक मै भूषन मँगाये फेरि धरवाये छि-

नक मै पहिरि उतारि कै धरति है । छिनक मैं उठि कै उहाँ तैं जाइ उहाँ बैठि छिनक मैं रस छिन रोसु मैं भरति है॥ कोऊ आली आपु तें जो बोलै तो बरजिये पै औरही सों बोलि बर बातनि ढरति है । देखिरी नबेली वह सुं-दर सहेलिन मैं जोबनगहेली कैसे तमासे करति है ॥ ८२ ॥

अथ ललित ।

अलकभौंहचितवनिचलनिटेढ़ीमुरिमुसुकानि ।
हाथ पाइ सुकुमार अति ऐसे ललित बखानि ॥

यथा ।

सुंदर है बैन भौंह काम की कमान ऐन खंजन से नैन लघु अंजनहि दिये हैं । सोने कीसी डार अति बनी ठनी सुकुमार बड़े बड़े बार हार मनिन के हिये हैं ॥ बेसरि की लह-रान मोतिन की थहरान मुरि मुसुकान कान्ह जू कों बस किये हैं । बिधिना सुधारे सुद्ध सुधाही सों मेरे जान राधिका के सबै अंग माधुरिहि लिये हैं ॥ ८४ ॥

अथ हेला।

पिय कै अँग लगि आपुही उपजावै जब काम।
करि मिलाप खिला करै हेला ताको नाम ॥८५॥

यथा।

सेज के समीप आइ लालन जगाइ पुनि आपुही तें उपजाइ लीजियतु काम है। उर सों लगाइ उर उरू परि उरू धरि कहूं कहूं कम्प कहूं नेसुक विराम है॥ पियमुख तन कियो चुम्बन को निजमुख सुंदर सुधाद्यो विधि मानों सुधाधाम है। सुरत के समै प्रौढ़ा ह्वैकैं पतिसंग रमै मिलाप मैं खिला करै हेला याको नाम है॥ ८६ ॥

अथ लीला।

जौलौं पिय आवै न ढिग तौलौं सखि सौं हासु।
पतिकी चितवनिचलनि कोस्वाँगकरैलीला सु ॥

यथा।

मृगमद अंग लाइ चोवा कंचुकी चढ़ाइ ओढ़ि पीतपट स्यामरूप की यों ठान की। सुंदर

मुकुट मोरपंख बनमाल गरे पहिरि कै कुण्डल उतारी वारि कान को ॥ मुरली बजाइ नैन तिरछैं नचाइ पुनि मुरि मुसुकाइ कै सिखाइ सिख मान को । आपु भई हरि वाहि आपुन सों करि ऐसी लीला करै ललिता सों लली बृ-षभान की ॥ ८८ ॥

अथ हाव ।

कछु इक अंकुर काम को तियतन उपज्यो होइ ।
पियहि देखि चौंकै डरै हाव कहत हैं सोइ ॥

यथा ।

हम सब अली मिलि बैठीं रंग रलिनि मैं दुलही यौं सहेली सौं खेल सो करति है । इह बीच काहू बाल बातनि मैं कह्यो कान्ह ऐसो डरो सुंदर ज्यों कोऊ न डरति है ॥ छोडि कै बिछौना मृगछौना ज्यौं उछरि परी छाती छोह भरी हिय धीर न धरति है । हौं तो रही देखि भेषैं अनसुने अनपेखे नांउ लियें ऐसें कोऊ औदकि परति है ॥ ९० ॥

अथ विहृत।

पिय समीप तिय कें हिये बढ़त जात अति चाह।
पूरे होत मनोरथ न विहृत् कहत कविनाह ॥

यथा—सवैया।

कुंज तें कुंज रली रस पुंज तें गुंजत डोलति भौंरी भई है। एकौ घरी घर मैं ठहराति न ऐसी कछू इन टेव लई है॥ एहो कहा कहिये कवि सुंदर जैसो चली यह रीति नई है। काल्हि की बाल हमारेंई देखत आजुही ह्वै गई कान्हमई है॥ ९२॥

अथ कुट्टमित—दोहा।

कुच पकरत अंकनि भरत आनँद सौं अनखाइ।
करै हहा नाही दई कहत कुट्टमित हाइ॥९३॥

यथा—कवित्त।

अधर सौं अधर लगाओ मति गाढ़े गहो खंडित अधर देखि यहै जिय धरैंगी। सुंदर कपोलनि मै चौका परै लखि लखि सखी सब ऐसी हैं जो बोली ठोली करैंगी॥ मिसु घालि

तरकैं सुतरकी तनीन तकि दरकी कँचुकि लखि सासु रोसु भरैंगी। बातें रोम रोम डरों तिहारे हौं पाइ परों हाहा करों छोड़ो जू जेठानी आइ परैंगी ॥ ९४ ॥

अथ मद लक्षण — दोहा।

जोबन के मद सों मतो चितवै चलै जु नारि।
ताही सो मद कहत हैं पंडित लोग बिचारि॥

यथा — सवैया।

जोबन की मदमाती है ऐंडि कै सुंदर काजर टीको बनाए। चूनरियां चटकीली छबीली की बेसरियां चित लेत चुराए॥ ठाढ़े पयोधर जेहरि गाढ़ो हँसै हरि देखि घनी छबि पाए। नैन नचाए चलै नठुवासी अँगूठनि ऐंठि अनौठ उठाए ॥ ९६ ॥

अथ तपन लक्षण — दोहा।

घरी चारि आवै न पिय तिय तचि कै अकुलाइ।
निदै निज भागनि सु यों तपन कहै कविराइ॥

यथा — कवित्त।

दहन ज्यों दहत है देह के दुकूल देखि

सूल सो लगनि लाग्यो फूलनि को गहनो ।
सौंधे सेज सरस कुरंगसार घनसार सरहू सों
सरसानो अब कहा कहनो ॥ धुव के समान
आये सुंदर सपतरिषि लटकी है हरिनी क्यों
होइगो निबहनो । आस धरे आलोकति आधी
रात ह्वै गई पै अजहू न आये आली अपनो
अलहनो ॥ ९८ ॥

अथ मुग्ध हाव—दोहा ।

मूरखता की बात कों कहै कछू जो नारि ।
मुग्धहाव तासों कहत पंडित लोग विचारि ॥

यथा – सवैया ।

सुलता पुनि कैसी हैं कैसे हैं रूख वे होइँगे
कौन सो रूप धरें । जिनकी सुभ डारनि सों
कह सुंदर ए मनि मानिक मोती फरें ॥ पिय
ऐसो उपाय कछू है कहूं अपनी इन आंखिन
देख परें । मनमोहन मोसो न बोलत हौ मुसु-
कात कहा मुख मौन धरें ॥ १०० ॥

मोट्टायित हाव—दोहा।

पिय की बातनि के चले तिय अँगिराइ जम्हाइ।
हाव मोट्टायित कहैं ताहि महा कबिराइ ॥१॥

यथा—सवैया।

आवति हैं झपकी पलकैं झलकैं दृग बोलति हैं अलसातें। ऐठि जम्हाइ उठै अँगिराइ अमेठति है तनको करिहा तें ॥ अंग अनंग तरंग झकोरत सुंदर और तमासे न यातें। होति है प्यारी प्रिया तब योंही चले जबहीं कछु कान्ह की बातें ॥ २ ॥

अथ विच्छित हाव - दोहा।

पिय तें रिस यातें प्रिया करै न कछू सिंगार।
सखी मनाइ सँवारई ए विछित्ति प्रकार ॥ ३॥

यथा—सवैया।

काजर कांगहो तेल सुगंध सिंगार की सौंज सखी सब ल्याई। पीतम सों जिय मै रिस यातें निरादर कै दृग भौंहै चढ़ाई ॥ कोइ न बोलि सकै अलि और तहां कबि सुंदर मैं समुझाई।

आजु मनाइ मनाइ निहोरि हरैं हरैं कैसेहु कैसैं बनाई ॥ ४ ॥

दोहा ।

लाल मनावै बाल कौं दै भूषन पग धोक ।
बाल बांधि करमाल सौं मारै इह बिब्बोक ॥

यथा — सवैया ।

आनि धरे हरि भूषन सौंज तिया चितवै न उतै हठ नाधें । लागे मनावन सौंहि हहा करि जोरत हाथ नवावत कांधें ॥ नेही भयो जब सुंदर प्यो मुहै फेरि तिया नयना सर साधें । सीस मैं कंज कली कौ दई कर दोउ लै फूल की माल सौ बांधें ॥ ६ ॥

अथ बिलासहाव — दोहा ।

चलति कहूं चितवति कहूं यौं आवत पियपास ।
देखि पिय की सौंज सब सौंधे सेज अवास ॥
मोरै मुह भौंहनि दृगनि जोबन गर्ब उदास ।
पुनि बिहँसै मुसुकाइ मुरि यासौं कहत बिलास ॥

यथा — कबित्त ।

चितवति कितहू तें कितहूं को अलबेली

अलीन सों इठलात चली पति पास कों। बार बार मुसुकाइ झूठेई उठै रिसाइ सखिन को बहकाइ करै परिहास कों ॥ आई पिय ढिग धरे जोवन गरूर देखि बैठक बिछौना सेज सुंदर अवास कों। बैठी मुह मोरि दृग भौंहनि मरोरि कह्यो जाइ न करोरि जीभिहूं सों वा बिलास कों ॥ ९ ॥

अथ बिक्षेप हाव लक्षण—दोहा।

अम्बर भूषन चलबिचल तनको कछु न सम्हार।
अलबेली जोवन गहिल ये बिच्छेप प्रकार॥१०॥

यथा—कबित्त।

एक हाथ चूरी एक पाइ मैं अधूरीलीक टीकि की न पूरी पीक ओठ रह्यो छाइ है। फैलि रह्यो कजरा सम्हारति न गजरानि सुंदर जरा-ऊन के साज बिसराइ है ॥ अलकैं सुधारि अहो आंचरु सम्हारि सब देखति हैं नारि कहूं नांउ धरवाइ है। हाथी कैसो छैया भई डोलति है दैया इह कहा भयो मैया या सयान कब आइ है ॥

इति हाव लक्षणम्।

अथ विप्रलंभलक्षणं—दोहा।

विप्रलंभ सिंगार पुनि सुंदर दुविध बखानि ।
बिछुरि गयो परदेस पिय एक भेद यह जानि ॥
दूजो भेद यहै पिया पीउ बसै इक गांव ।
सुंदर डर तें लाज तें है न सकैं इक ठांउ॥ १३॥

यथा—सवैया।

सुख सेज सुगंध सुधाकर सीत समीर सुहाति नही सखियो। कविराज कहै दुहि भाँतिनि कैसे बिना जग जीवन जाइ जियो॥ कबहूं बिरहागिन मै तचवै कबहूं दृग नीर में बोरि दियो । पिय के बिछुरे हियरा इहि काम लुहार के हाथ को लोह कियो ॥ १४ ॥

अन्यच्च—कवित्त।

सोरा सो सँवारि कै गुलाब माहि ओरा डारि सीतल बयारिहूं सों बार बार बरियो ॥ चैन न परत छिनु चंपक तें चंदन तें चंद्रमा तें चांदनी तें चौगुनी क्षै जरियै ॥ सुंदर उसीर चीर ऊजरे ते दूनी पीर कमल कपूर कोरि एक

ठौर करिये । एते मानि बिरहागि उठी तन मांझ लागि मोई होत आगि जोई आगि लाइ धरिये ॥ १५ ॥

यथा—सवैया।

सूल से फूल कलिंदी को कूल दुकूल सु मूल भयो परिबे को । तंत पर्यो है बसंत को सुंदर कंत सो अंतर के परिबे को ॥ एतो ऽब औट अजान अनंग अचंभो कहा इनके करिबे को। तू क्यौं जरावै जर्यौ हरतें दुख जानत जो जिय मैं जरिबे को ॥ १६ ॥

दोहा।

बिप्रलंभ मैं होत हैं दसौं अवस्था आनि ।
अभिलाषा स्मृति गुनकथन चिन्ता जड़ता जानि॥
पुनिउद्वेग प्रलापकहि व्याधि बहुरि उन्माद ।
दसयों निधन सुकबि कहत जामे कछु न सवाद॥

अथ अभिलाष—दोहा।

पियकेजियतिय मिलनकी होतिजहां अतिचाह।
सुंदर तासौं कहत हैं अभिलाषहिं कबिनाह ॥

यथा ।

कोही तेरे साथ काल्हि सुंदर नई सी ग्वालि वाकी चितवनि चालि जीतें न टरति है । क्यौंहू वह आवै कहो कैसे आवै अजहूं तो सूधेहू न छाती पर आंचरु धरति है ॥ हाहा हँसि कहि देखि मानिहै तो मानिहै न मानि है तो जानि है कै हँसीयै करति है । अहो रहो दई ऐसी अबहीं कहां तें भई गौनेहूं न गई लई कैसे कै परति है ॥ २० ॥

अथ स्मृति लक्षण—दोहा ।

हाव भाव लावन्य तनु तिय को रूप सिंगार ।
बिछुरे तें जहँ सुमिरिये स्मृति को यहै प्रकार ॥

यथा—सवैया ।

अधरारस लेत लजौंहैं से नैन निचौंहीं सी भौंहैं भई जब वै । रति रंग अनंग तरंगनि मैं तुतुरात सुनी बतियां तब वै ॥ सुधि आवत सुंदर ऐसैं अनेक सुतोऽब सुभाइ रहो सब वै । उरसों ममकै रसकै चमकै जे लई ससकैं कसकैं सब वै ॥ २२ ॥

अथ गुनकथनं—दोहा ।

बिरह बीच तिय गुनन को करिये जहां बखानि ।
ताही सों इह गुनकथन सुंदर कहत सुजान ॥

यथा—कवित्त ।

कुंदन से तन की तनक छबि ताकतही सबै सुधि अपनेहू तन की भुलाति है। हीरा मोती मानिक अनारदाने दामिनि ये सबै रद जबै नेक मुरि मुसुकाति है ॥ सुंदर उसास लेत वाकि मुख बास के सुफूल छोड़ि भौंर पांति पास मड़राति है। रूपकी उँज्यारी छिन ढिग तें न कीजै न्यारी ऐसी वह प्यारी सो बिसारी कैसें जाति है ॥ २४ ॥

अथ चिन्ता लच्छण—दोहा ।

प्यारी सो दरसन मिलन कौन भांति तें होइ ।
पिय सोचै जिय मै जु यों चिन्ता कहिये सोइ ॥

यथा—सवैया ।

केते बिचार बिचारत जी मै हजारन हों उपचार बनाऊँ । ऐसे तो भाग हमारे कहा हैं

छबीली की छाती सों छाती छुवाऊँ ॥ जो इन आपनी आंखिन सों उन आंखिन कैसिहु देखन पाऊँ । सुंदर तो गहि कै अपनी पुनि या चित चिन्तहि मारि मिटाऊँ ॥ २६ ॥

अथ जड़ता लच्छण—दोहा ।

तन अचेत जड़ता कहत जे पंडित कविधीर ।
यामै और न मानिये यहै जानिये पीर ॥२७॥

यथा—कबित्त ।

जबहीं ते देखै लाल तब तें बिहाल बाल न सुहाति माल तन ज्वाल ज्यों जरतु है । अनल है खायो किधों अनलही खाई आली काल तें कबे जो बातें काल सों करतु है ॥ चित्र मैं चितेरी है कि सुंदर उकेरी है कि जंजिरनि जेरी है ज्यों घरी लौं भरतु है । मोहन तिहारे नाउ नेक चौंकि परति है याही तें भरोसो मोहि जीबे को परतु है ॥ २८ ॥

उद्वेग लच्छण—दोहा ।

जामे कामकलेस तें सुंदर कछु न सुहात ।
भली बात लागै बुरी सो उद्वेग कहात ॥२९॥

यथा—सवैया ।

इक तो कलकान करै कबि सुंदर कोकिल के दिन राति रुतै । पुनि आइ रहै निसि कोटिक चन्द बढ़ावत है सु बिथा बहुतै ॥ अ-बही वह तानिहै बान कमान तू जानति है मनसा के सुतै । नखसारि बिसारिहै साज सबै घनसार तुसारि उमारि उतै ॥ ३० ॥

अथ प्रलाप लच्छण—दोहा ।

बिरह काम की पीर तें कहै आन को आन ।
तासों कहत प्रलाप तें जे कबि हैं सुज्ञान ॥

यथा—कवित्त ।

तारा ऐज तरुनी के मांग मैकै मोती फैले चंद्रमा सों मानो चंद्रमुखी को बदनु है । खेलत ये खंजन ते ललना के लोचन हैं चंपक सो मानो तनु सोभा को सदनु है ॥ बिद्रलो है दाखो ताको दानी यह देखियतु सुंदर दि-पत मानो हीए को रदनु है । मै तो अंग अंगना के आके अवलोकत हौं तऊ काहे मोहि मीड़े मारतु मदनु है ॥ ३२ ॥

गई है पीरी पानी पान ते न होति नीरी छि-नक मै सीरी छन आगि सी बरति है ॥ थकी सी चकी सी जकी जकरी सो पकरी सी सुंदर धरधराति धीर न धरति है । जब तें छबीले जू के ईछन तीछन देखि ताछिन तें छीद कैसे छंदनि करति है ॥ ३६ ॥

इति दशाकथनं ।

— ❊❊❊ —

अङ्ग चेष्टा रीति—कवित्त ।

कैसे धरे रहत रुखाई माइ निठुराई जाने काछू जानत न थोरी बैस बितए । आवत अ-चंभो इह सुंदर इतीक ऐसी काम की कहा तें घातें बातें सीखी कित ए ॥ कैसे हैं सयाने काहू कहूं नेकहूं न जाने केती रही बैठी आस पास इत उतए । तीखे दृग कोरनि की ओरनि सों देखो दोऊ चोर जैसे चातुरी के चोरा चोरी चितए ॥ ३७ ॥

अन्यच्च—कवित्त ।

पहिले हौं गई नीके बातन लगाय लई

मैंहूं जान्यो भली भई आजु बतराति है । सुंदर मैंहँसि कै चलाई रस कथा कछू रीझि रीझि हँसि हँसि मुरि मुसुकाति है॥ ऐसे मैं तिहारो नाउ लियो जबही मै तब औरै रंग औरै रीति औरै भई भांति है। देखतही सौंहै भई डीठि तिरछौहैं वै तो गई फिरि भौंहै ज्यों कमान फिरि जाति है ॥ ३८ ॥

अन्यच्च—सवैया।

कामकथा मैं कही कितनी पुनि कान कियो न कहूं उन सौंहै । जानि न जात इहै धौं कहा अब मान गुमान कि रोस रुठौंहै ॥ लीजतु नाम तिहारो जबै तब सुंदर वा मुरि बैठति यौं है । मोरति नारि बिटोरति ओठनि जोरति नैननि मोरति भौंहै ॥ ३९ ॥

अन्यच्च—कवित्त।

बानक सो बनि कै अचानकई आइ करि हाउभाउ चाउन सों चित चोरि लैगई । अंबर कपूर मृगमद की तरंग आवै अंग अंग

देखैं सुधि सुंदर सबै गई ॥ तिरछे चितै कै नैन तीर से चलाइ पुनि घूंघट बनाइ नारि लटकाइ नै गई। चली मुरि मुसुकाइ अधरा कछू डुलाइ छतियां दिखाइ छेद छतियां मैं कै गई ॥ ४० ॥

देखै जहीं वह मोहनि मूरति पूर ते दौरि तहीं रस ठानैं। आपुही जाइ अगाऊ मिलै उर अंतर यों अपनाइत आनैं ॥ सोऊ है सुन्दर कोऊ मिलै समुझावै ज्यौं दोऊ ये है करि जानैं। माहि कहा सिख देत सखी लखि ये अंगिया सिखवेई न मानैं ॥

अन्यच्च--सवैया ।

सोहत सुंदर रंग भरे हैं किधौं कहूं सिद्ध सुधा सों सुधारे । चंचल हैं सु चलैं न हलैं न हलाहल खाये से आलस भारे ॥ घूमत ढीले रँगीले छबीले रसीले किधौं मद सों मतवारे। सांची कहो इन नैननि आजु किधौं कहूं कान्ह कुमार निहारे ॥ ४१ ॥

अन्यच्च—सवैया।

नन्दनन्दन ठाढ़े हैं द्वार भये तहँ सुंदर मंदिर तें धसि कै। निकरी वृषभान लली जु अली न सु गली में लली जू चली हँसि कै॥ तब तें हरि के दृगतारन माह यों राधे को रूप रच्यो बसि कै। मनो राख्यो है सोने को रंग अनंग सुनार कसौटिन मै कसि कै॥४२॥

यथा—कवित्त।

निस दिन वहै ध्यान वाही की कथा व-खान इहै जिय ज्ञान कहूं प्यारी वह दरसै। अकल विकल मन लालन को पल पल सुंदर ज्यों जल बिन मीन छीन तरसै। बाल के बि-लोकि बिनु बालम बिरह तैसे जैसें कुरुखित बीचु दिया दानु सरसै। छिन हो सुदिन भयो दिन हो सुपाख भयो पाख हो सु-मासु भयो मास हो सु-बरसै॥ ४३॥

यथा—सवैया।

आवत ज्यों मथुरा मै सुने हरि गेहनि तें

तिय दौरि करी सी । लाज को छोड़ि ज्यों डोरि तें टूटत मूठि तें छूटि चली चकरी सी ॥ देखत वा सुभ मूरतिकों कबि सुंदर यौंही रही पकरी सी । हाली न चाली ठगी सी सबै ते छकी सी थकीसी जकी जकरी सी ॥ ४४ ॥

भावत न पानी पान आकुल बिकल प्रान गरभ के जे निदान ते सबै लुकावने। जिठानी सों कह्यो चहै सासु तन गई डीठि तहीं कियो नैननि के पलक चुकावने ॥ दुहि बीच पहि-लोठीं बाल कों बिलोकि आली पूछि उठी एहो तुम्हे होत हैं उकावने । उठी सतराइ छबि सुन्दर कही न जाइ झुकि झहराइ बोल बोली मुसुकावने ॥ ४५ ॥

काहे को दुरावति है हमहूं मुरावति है कौन कहलावति है झूठी सौंहे खाति है । लियो है चुराइ चित साहजहां दूलह को सु तौ यह बात सब नीके जानी जाति है ॥ देख तुहीं बैठ डीठ लालन की हेरि फेरि तियनि मैं

तोहि पर आइ थिर थाति है। मंच की कटोरी जैसे चली २ डोलति है चोरही की ठौर भलें आइ ठहराति है॥

प्यारी ज्योंहि आई उठि मोहन मनाई चलो खेल कों सुहाई ऐसी कुञ्जनि की ये गली। मानो मनुहारि देखो जिय में बिचारि तुम सुंदर चतुर नारि नागरी महाभली॥ रहो जू गुसांई हम हैं गँवारि ऐसी कहि, कान्ह जू सौं हाथ जोरि पालगन कै चली। छबि को छबीली की निरखि छबीलो छैल, छकि सो रह्योई रही छकि कै सबै अली॥ ४६॥

भौंहैं कमान सी बान से नैन कटाच्छ कटारी सों रूप यौं पायो। राखि उलट्टि नगारे पयोधर सुन्दर तेग सो हाथ उठायो॥ बेसरि नेजा है नाक धुजा मुखचन्द के हाथ निसान गहायो। कामिनि कै तन मध्य मनो बिधि काम की फौज को साज बनायो॥ ४७॥

माइके न माइ बिन बाहिर दियो मैं पाइ

सासुरे सु सासुही के साथ बसियतु है। देवर के कान धुनि नेवर की परे पुनि चोर कौसी नांई तो अटा में धसियतु है॥ देखिबे कौ हौंसिनि परोसिनि सदाई रही बोलतही बोल गरेही में कसियतु है। सुन्दर कहां को कान्ह कासों पहिचान जान ककाकी सौं कहा जानौं कैसे हँसियतु है॥ ४८॥

गोरस लै चली मिली आलिन मै ग्वाली एक आइ घेरि रह्यो वीच बाट मै बिहारी है। मांगत जगात कहि सुन्दर रिसात लखि रूखी भई जाति सतराति देति गारी है॥ आगे गई सखी सब रही वा अकेली जब प्यारे कह्यो जाहु हँसि बोली तब प्यारी है। जरी वह आंखि जिन देख्यो भावै और पुनि कीजै क्यों न जी को जिय जग पैजिवारी है॥ ४९॥

कंचन कितोकु कैसे कुंदन समान कीजै चंपे की निकाई नीची अंग पटतर तें। कमल सी नैन मन मोहत मनोजहू कै उर मैं उरोज

अति राजत उक्कर तें । थलज को फूल कौन दारिम को कली कहा बोलतही चुयो परै सुधा सो अधर तें । ऐसो सिलिसिली ओप सुन्दर कपोलनि की खिसिलि खिसिलि परै डीठि जिनि पर तें ॥ ५० ॥

अलीन के संग चली मिलि कुंजगली मैं कलीन को हाथ चलायो । हँसी सखि सों जब आपु उहां हरि है तुम सुन्दर सोधु न पायो ॥ कहा कह्यो ह्वैहै री कान्ह तो देखी मै जान्योइ नाहिन काहू जनायो । वहाँऊ ये साथ जराऊ ये बात दई दई देख इहाँ हँसि आयो ॥ ५१ ॥

अथ केश वर्णन ।

और तो सिंगार सब धरे रहो कान्ह वाके कचन की छबि कही परै एक आँगही । सुंदर कहै जे सुकुमार बार है सेवार भूले मखतूलहू की तूल उपमा कही ॥ एते मान बड़े बार पाटी पारियत जबै तीसरे मुकाम धसै केसनि तें काँगही । नारि पर आइ पुनि पीठि पर ठहराइ पीछैं पहुंचति जाइ क्यौंहू क्यौंहू लाँकही ॥

अथ बरुनी ।

अँखिन आगे बिराजत सुन्दर मोरपखावन की छबि छायें । कारी महाअपकारी अन्यारी बिहारी निहारि कै सामुहै आयें ॥ यों तरुनी की बनी बरुनी पढ़ैं ब्राह्मन वेद ज्यों हाथ उठायें । ऊँचे कों टेढ़िये लेति मनो मनमोहन के मन कों उकसायें ॥ ५३ ॥

अथ पीतम मिलन—सवैया ।

परदेस ते सुन्दर पीतम आये हुलास बिलास बढ़े सिगरे । उर कण्ठ लगाइ लई ललना गहि गाढ़े अनन्द सों अङ्ग भरे ॥ तरकी है तनी दरकी अंगिया मनि माल ते टूटि के लाल परे । मनों पीके मिले तिय के हिय के अंगरा बिरहागिनि के निकरे ॥

अथ स्नानं ।

बैठी अन्हान बखानों कहा उपमा तिय की तिहुंलोक में नाहीं । खोले हैं भूषन छोरी है बेनी उतारि धरी अँगियाऊ तहाँहीं ॥ पीन

पयोधर ऊपर सुंदर आयुही नारि नवाइ कै चाहीं। स्यामता यों कुच अग्रनि मानों परी दृग तारन की परछाहीं ॥ ५४ ॥

अथ रोमावली ।

कैहूं उठे व्रषभानसुता की अचानकही अचरा की किनारी । देखि रोमावली रूप की रासि रहे मनही मन रीझि मुरारी ॥ पूरब वैर तें संकर को कहि सुंदर ऐसो अनंग विचारी। ईस के तीसरे नैन में दैन कों मानहु मैन सलाक सँवारी ॥ ५५ ॥

अथ अलकवर्णनं ।

मानों भुजंगिनि कंज चढ़ी मुख ऊपर आय रही अलकैं त्यौं । कारी महा मटकारी है सुंदर भींजि रही मिलि सौंधनहीं सों॥ लटकी लट वा लटकीली तें और गई बढ़ि कै छवि आनन की यों। आँकु बढ़े दिये दूजी बिकारी के, होत रुपैयन ते मुहरे ज्यों ॥ ५६ ॥

अथ नीवी ।

चाँपि चिहुटी सों चुनी नाभि के निकट नीको नवली को नीवी छवि कोटिक धरति है । बाँधि कसि डोरी राखी राखी कीसी फूंदि थोरी सुंदर गुलाब कीसी कली ज्यों हरति है ॥ ठाढ़ी बाल आली सों कहत बात हँसि हँसि तके में तमासे जैसें घूंघुरी करति है । हूं कहे उकसि आवै हाँ कहे दबकि जाइ गाढ़े हँस दिये खि. सलिये परति है ॥ ५७ ॥

अथ बाणी — सवैया ।

मुकुता से झरैं मुख तें मुसुकात जहीं कछु अच्छर उच्चरिये । कह सुंदर ऐसे सवाद सुने तें सुधा मनो श्रौननि में भरिये ॥ कितनोऊ कछू करिये सु कवित्त कहा कहि कैं उपमा धरिये । तुमि बात कहे सुख लागत है कहिवोई करै सुनिबो करिये ॥ ५ ॥

अन्यच्च — कवित्त ।

अमृत अलोप ह्वै कै रह्यो तीन्यो लोकनि

में काह्नना सवाद जान्यो कहानीये कही है। सुन्दर अधर नीचे रहे हैं लजाइ करि मेवनि में माधुरी न ऐसी डह डही है ॥ मिसरी नै आगे जाके दातनि तिनूका गह्यो समता को उपमा न आन कहूँ लही है। तेरी यह बानी की मिठाई सुनि देखिये तो मीठी मीठी सौंज सब सौंहै ह्वै कै रही है ॥ ५९ ॥

अन्यच्च--सवैया।

आजु लखी ललना पढ़िबे में कहा कहौं हौं तो महा अनुरागी। बारक तो पहिलै सुनि लेति है सुन्दर बोल गुरू पै सभागी ॥ आखर वै मुख तैं उचरैं फिरि बानी सुधारि सुधा रस पागी। सोहति यौं सु पढ़ावनहार कौं आपुही मानो पढ़ावन लागी ॥ ६० ॥

अथ उद्दीपन चन्द्रिकावर्णनं—सवैया।

फूली कुमोदिनी मोद सौं चन्द विनोद सौं सुन्दर तारे हैं त्यौंही। मोती के हार बने घन-सार सनी सुख सेज सुगन्धनि स्यौंही॥ राधिका

माधव जू जमुनातट ये जुग जोन्ह मैं जोये मै ज्योंहो । जानत हो अनुमान रमासँग होहिंगे क्षीर समुद्र में योंहो ॥ ६१ ॥

अन्यच्च—सवैया।

रूपेकी भूमि की पारे पर्यो सगरो जग चंदन सो लपटानों । यों लाख जोन्ह महा कविराइ कहै उपमा इक याहू तें आनों ॥ चन्द की अंसुनि को करि सूत बुन्यों बिधिका सित अम्बर जानों । उज्वल कै पुनि व्योम बनाइ दसो दिसि मैं मढि राख्यो है मानों ॥ ६२ ॥

दोहा ।

सुरबानी यातें करी नर बानी मैं ल्याइ ।
जातें मग रसरीति को सब पै समुझ्यो जाइ ॥
यह सुन्दरसिंगार की पोथी रची बिचारि ।
चूक्यो होइ जु कवि कछू लीजो तहां सुधारि ॥

॥ इति ॥